|| धर्मश्री ||

विद्यावाचस्पति आचार्य स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज के उपदेशों एवं प्रवचनों पर आधारित

धर्मश्री

भारतमाता मंदिर (हरिद्वार) की सेवा में समर्पित

धर्मश्री प्रकाशन, मानसर अपार्टमेंट्स, सूर्यमुखी दत्तमंदिर के समीप,
पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे-४११ ०१६ दूरभाषः (०२०) २५६५२५८९, दूरमुद्रणः (०२०) २५६७२०६९
ईमेल : dharmashree123@gmail.com वेबसाईट: www.dharmashree.org

वर्ष १६ अंक २ ज्येष्ठ-आषाढ, युगाब्द ५११८ त्रैमास जून २०१७

संपादक मंडल:
संपादक
डॉ. प्रकाश सोमण
सह-संपादक:
श्री. भालचन्द्र व्यास
मार्गदर्शक:
प्रा. दत्तात्रय दि. काळे
डॉ. संजय मालपाणी
सहयोगी:
पं. अशोक पारीक,
श्री. हनुमान सारस्वत,
श्री. सकाहरि पवार
व्यवस्थापक:
श्री. श्रीवल्लभ व्यास,
श्री. अनिल दातार,
श्री. दत्ता खामकर
डी.टी.पी. मुखपृष्ठ:
जैनको कम्पुटर्स, अजमेर
सो. अंजली गोसावी, पुणे
मुद्रक:
संपदा ग्राफिक्स
४९७, शुभोदय, भैरवनाथनगर,
कोंढवे-धावडे, पुणे - २३
चलभाष : ७३५००११९२६

सूचना
पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। उनसे पत्रिका या संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। - संपादक

अनुक्रम

४ संपादकीय
५. जीवन समरांगण के विजय सूत्र
८. एकाग्रता में छिपी है जीवन की सफलता
११. व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक संतुलन की अनिवार्यता
१५. ब्रह्मा सावित्री वेद विद्यापीठ का वार्षिकोत्सव : एक रिपोर्ट
१७. कॅनडा में माउली की मूर्ती विराजमान्।
१८. संसार में नहीं, स्वयं के दृष्टिकोण में परिवर्तन संभव है!
२१. 'मध्य प्रदेश राज्य सांस्कृतिक नवोत्थान की ओर अग्रसर'
२२. प.पू. राष्ट्र संत आचार्य स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज (डि.लिट.)
२३. पूज्यवर की धर्मयात्रा - २०१७
२५. श्री संत महात्माजी की स्वर्ण जयन्ती सानन्द सम्पन्न!
२६. सदाचार और उसकी श्रेष्ठता
२७. श्री सुरेश जाधव, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष निर्वाचित ; (आगामी कार्यक्रम)
२८. गीता परिवार :- पानीपत, कोटा, २९. हैदराबाद ३०. उत्तरप्रदेश, जयसिंगपुर
३१. जालना, लखनऊ, ३२. रा. यो. महोत्सव : एक स्मृति! ३३. कलबुर्गी
३४. संस्कार वाटिका २०१७
४१. वेदविद्यालय में छात्र प्रवेश सूचना

★ आवश्यक सूचना ★

समस्त लेखकों, गीता परिवार की शाखाओं एवं वेद विद्यालयों से विनम्र निवेदन है कि वे ''धर्मश्री'' में प्रकाशनार्थ सामग्री निम्न पते पर भिजवाने का कष्ट करें -

भालचन्द्र व्यास, सह-संपादक, ''धर्मश्री''
व्यास भवन, 209/29, गुलाबबाड़ी, अजमेर- 305007
फोन: 0145-2660498, मो. 09414003498, फॅक्स: 0145-2662811
ई-मेल: bhalchandravyas43@gmail.com

धर्मश्री के इस अंक के यजमान
श्रीमान् अच्युतजी जोशी (औरंगाबाद) हैं।
साभिनंदन धन्यवाद !

संपादकीय

गत दो महिनों में भारतीय सांस्कृतिक जगत् की दृष्टिसे महत्त्वपूर्ण तीन घटनाएँ घटी। सबसे **पहली,** कनाडा में टोरोंटो समीप ब्रॅम्पटन स्थित संत ज्ञानेश्वर आश्रम में संतशिरोमणि 'माउली' संत ज्ञानेश्वर महाराज की मूर्ति की विधिवत् स्थापना हुई। पूरे जगत् में भारत के बाहर 'माउली' का यह पहला ही मंदिर। हम सभी 'माउली' भक्तों के हर्षोल्लास का विषय। **दूसरी,** हमारे सबके प्रिय एवं श्रद्धेय प.पू. स्वामीजी को भोपाल (मध्यप्रदेश) स्थित श्री अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय द्वारा उनके प्रथम दीक्षान्त समारोह में प्रथम विद्यावाचस्पति (मानद) उपाधि प्रदान की गयी। **तीसरी,** दि. १ मई को भगवान् आदि शंकराचार्यजी की जयंति मध्य प्रदेश शासन द्वारा राजकीय स्तर पर पूरे राज्य में विविध उपक्रमों के माध्यम से मनाई गयी। उसी दिन मध्य प्रदेश के आदरणीय मुख्यमंत्री श्री. शिवराजसिंग चौहान ने उद्घोषणा की कि भगवान् आदि शंकराचार्यजी की दीक्षा स्थली श्री क्षेत्र ओंकारेश्वर में शीघ्र ही उनकी स्मृति में उनकी विराट मूर्ति, दृक्-श्राव्य रूप जीवनी तथा वेदान्त को समर्पित शोध संस्थान आदि से युक्त विशाल स्मारक निर्माण होगा।

वैसे देखा जाय तो किसी को कोई उपाधि प्राप्त होना या स्मारक निर्माण ये घटनाएं विरला नहीं है। अपने देश में तो कतई नहीं। उपरोक्त घटनाओं की विशेषता है उनमें किया गया व्यक्ति-चयन। भगवान् आदि शंकराचार्य जी के स्मारक के संबंध में तो कोई दो राय नहीं हो सकती कि वह बनना चाहिए। प्रश्न होता तो यही कि वेदान्त की इस जन्मभूमि में वह अब तक कैसे नहीं हुआ। पूज्यवर को प्रदत्त विद्यावाचस्पति उपाधि के विषय में भी वही स्थिति है। पैतृक परंपरा, गुरु परंपरा, उपासना, विद्याध्ययन, वक्तृत्व, क्रांतदर्शित्व, संगठन, प्रबंधन और इन सबके बलपर प्राप्त सच्चा 'गुरुत्व' इन सबसे अलंकृत इस विरला विभूति को यह उपाधि मिलें यह कोई अचरज की बात नहीं। परंतु किसी भी व्यक्तिकी उपलब्धियों हेतु उसका सम्मान विश्वविद्यालय जैसे शारदापीठ द्वारा होना यह अपने में एक विशेष स्तर का सम्मान होता है। पूज्यवर ने भी उसे आज तक की हुई विश्वरूप भगवान् की सेवामयी पूजा का प्रसाद मानकर मस्तक पर धारण किया है।

इन घटनाओं के माध्यम से जो और एक बात उभरकर सामने आयी है वह भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है। इन दिनों 'अच्छे दिनों'का बहुत बोलबाला हो रहा है। परंतु बारीकी से देखें तो 'अच्छे दिनों' के समर्थक तथा विरोधक- दोनों का ध्यान प्राधान्यतया बाहरी, भौतिक अच्छाईयों पर सुधारों पर है। स्वच्छता, सस्ताई, उत्पादवृद्धि, भ्रष्टाचार-मुक्ति, स्वास्थ्य आदि बिंदुओंपर 'अच्छे दिन' आ रहे है या नहीं इसे आंका जा रहा है।

इसमें कोई दो राय नहीं कि उपरोक्त सभी बिंदुओं के संबंध में प्रगति होनी चाहिये। लेकिन अच्छे दिनों का और भी एक आयाम है - जिनके कारण इस भारतवर्ष की अनोखी पहचान बनती है ऐसे व्यक्ति, विभूति, संस्थाएं, विचारधाराएं आदि सभी को भी इस देश द्वारा, देश के शासन द्वारा वह सम्मान, मान्यता प्राप्त होनी चाहिए जिसके वे अधिकारी हैं। मध्यप्रदेश का शासन, विशेषकर उसके मनीषी मुख्यमंत्री श्री. शिवराजसिंगजी चौहान इस हेतु विशेष अभिनंदनपात्र है कि उन्होंने ऐसे अनोखे निर्णय लेकर सु-शासनका एक नया अनुकरणीय पहलू इस देश के सम्मुख रखा है।

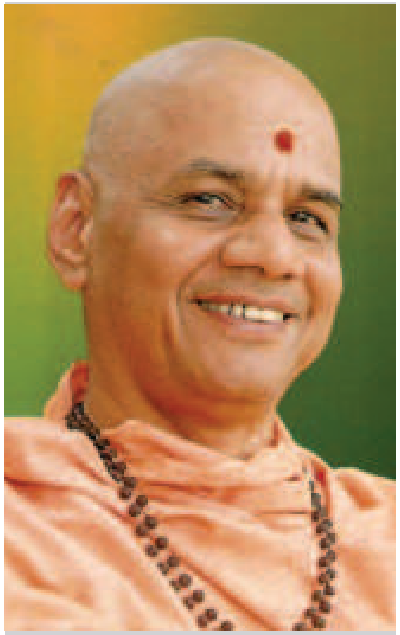

जीवन समरांगण के विजय सूत्र

जीवन एक संघर्ष है और इसमें सभी विजय के आकांक्षी हैं; लेकिन सभी विजयी नहीं होते। कौन इसमें विजय प्राप्त कर सकता है और कौन नहीं, जब इस बिन्दु पर हम विचार करना आरम्भ करते हैं; तो भगवद्गीता, महाभारत आदि ग्रंथों के स्वाध्याय अथवा रामायण में वर्णित भगवान् राम के जीवन चरित्र से हम लोगों के ध्यान में अनेक सुंदर सूत्र आ जाते हैं।

सबसे सुंदर प्रसंग हम लोगों को उपलब्ध होता है रामचरितमानस में। भगवान् श्रीराम ने सारे दिव्य सूत्रों का उपदेश हम लोगों को दे दिया। 'मानस' में एक ऐसा प्रसंग आता है जहाँ- भगवान् स्वयं युद्धक्षेत्र में ही उपदेश और आत्मचरित्र दोनों एकसाथ एकत्रित करके हम लोगों के समक्ष रखते हैं। प्रभु के जीवन में भी एक संघर्ष निर्माण हुआ। महाभारत का युद्ध अठ्ठारह दिनों तक चला। वह एक छोटा संघर्ष था; लेकिन रामायण

अधूरा साधन पूरी सफलता नहीं दे सकता

जिस प्रकार आसन-प्राणायाम पूर्ण योग नहीं है; उसी प्रकार केवल समय प्रबन्धन भी जीवन - प्रबन्धन नहीं हो सकता।

का जो युद्ध है, राम-रावण का, वह सित्यासी दिनों का युद्ध है। उस अवधि में रावण और भगवान् श्रीराम दो बार आमने-सामने हुए। पहली बार तो दूसरे ही दिन आ गए। रावण बड़े उत्साह में आया था; लेकिन प्रभु ने स्वयं उसके घोड़ों को, सारथी को समाप्त कर दिया। उसका रथ तोड़कर उसे निःशस्त्र कर दिया। रावण बिल्कुल अकेला रह गया। भगवान् ने कहा, ''लंकेश लौट जाइये''। रावण लौट गया। तत्पश्चात् सत्तर दिनों तक, (इसके पश्चात् और अठ्ठारह दिन) भगवान् रोज युद्ध कर रहे थे। हम लोग थोड़ा-सा संघर्ष करके थक जाते हैं। इसीलिए भगवान् श्रीराम का जीवन हमारे लिये आदर्श जीवन है। तो जरा देखिये, भगवान् स्वयं रोज युद्ध कर रहे हैं और युद्ध लंका के चारों द्वारों पर चला है। विशेषता इस बात की भी है कि - इस युद्ध में भगवान् के पास युद्धोचित कोई साधन सामग्री नहीं। भगवान् के पास रथ नहीं है और न कोई अन्य वाहन। कभी-कभी श्री हनुमान जी महाराज स्वेच्छा से भगवान् के वाहन बन जाते। प्रभु के पास कोई वाहन नहीं है। सत्तर दिनों तक भगवान् युद्ध करके थक गये हैं। वर्णन ही ऐसा है वाल्मीकि रामायण में -

एक युद्ध, हमारे भीतर अनेक परिस्थितियों के साथ चल रहा है। इन परिस्थितियों के साथ युद्ध करते समय हम लोग कभी हार जाते हैं, कभी जीत जाते हैं। साधक भी कभी हारता है, कभी जीतता है। कौन हारता है, कौन जीतता है? जो स्वयं अपनी प्रतिरोधक शक्ति को ठीक रखता है, वह जीतता है और जिसकी वो क्षमता घटती जाती है, वह हारता जाता है तथा यह प्रतिरोधक क्षमता हमें सत्य, धैर्य, शील तथा शौर्य आदि गुणों से प्राप्त होती है।

जिस प्रकार अर्जुन के प्रश्न और विषाद् को निमित्त बनाकर भगवान् श्रीकृष्ण ने मानवकल्याणार्थ भगवद्गीता का उपदेश कर दिया उसी प्रकार भगवान् राम ने यहाँ पर विभीषण के प्रश्न को निमित्त बनाकर, अपना चरित्र बतलाते हुए, सभी विजयाकांक्षी लोगों के लिये एक रहस्य खोल दिया है।

'ततो युद्ध परिश्रान्तम् समरे चिन्तया स्थितम्'

भगवान् परिश्रांत हो गये हैं और उनके मन में चिंता भी निर्माण हो गयी है कि कितना खिंच गया यह युद्ध ! सोचा नहीं था कि इतना खिंचेगा, लेकिन खिंच गया। और उस दिन अगस्त्य महामुनि वहाँ आकर भगवान् को कुछ मंत्र प्रदान करते हैं। भगवान् थोड़ी चिंता भी करने लग गये हैं। पहली बात, भगवान् सत्तर दिनों तक युद्ध करते-करते थके हुये हैं और रावण इतने दिनों तक विश्राम करके आया है। दूसरी बात, भगवान् के पास जो सेना है वह आरंभ से ही लड़ रही है। रावण नई सेना लेकर आया है। तीसरी बात, रावण अपने विलक्षण रथ में बैठकर आया है। रावण 'दशग्रीव' है, मायावी है। ऐसी स्थिति में रावण जब बिल्कुल तरो-ताजा होकर युद्ध करने के लिये आया और भगवान् स्वयं युद्ध क्षेत्र में आकर खड़े हुए, तो पूरी स्थिति आकलन के बाद विभीषण के मन में संदेह निर्माण हो गया।

विभीषण रावण को ठीक तरह से जानता है। वह उसका भाई है और इसीलिये विभीषण जानता है कि रावण के साथ इस प्रकार लोहा लेना भगवान् के लिये भी कठिन हो सकता है। विभीषण चिंताक्रांत हो गया। भगवान् के समीप आकर , विभीषण अपना कुछ निवेदन करते हैं, अपनी चिंता व्यक्त करते हैं।

रावनु रथी, बिरथ रघुबीरा।
देखि विभीषण भयउ अधीरा।।

रावण रथ में है। भगवान् के पास रथ नहीं। विभीषण इस विषम युद्ध को देखकर और इस बात को भी भाँपकर कि अब रावण अपने सभी प्रकार के बलों का प्रयोग करेगा; क्योंकि रावण अब युद्ध करने के लिये अपना सबकुछ दाँव पर लगाकर ही आया है।

अधिक प्रीति मन भा संदेहा।

जब प्रेम बहुत होता है तो चिंता भी बढ़ती है। तो उस चिंता के कारण विभीषण ने भगवान् के समीप जाकर-

बंदि चरण कह सहित सनेहा।

उन्होंने भगवान् को प्रणाम किया और कहा, ''ठाकुर मुझे बड़ी चिंता हो रही है। यह युद्ध कैसे होगा? हमारे पास तो कुछ भी नहीं है। रावण अपने पूरे दलबल के साथ आया है और -

नाथ न रथ नहिं तन पद त्राना।
केहि विधि जितब बीर बलवाना।।

अर्थात् हे नाथ! आपके पास न तो रथ है और न कवच और पदत्राण । ऐसी स्थिति में रावण के साथ युद्ध करना और जीतना बहुत ही कठिन है।''

विभीषण की आशंका बिल्कुल ठीक थी। जिस प्रकार अर्जुन के प्रश्न और विषाद् को निमित्त बनाकर भगवान् श्रीकृष्ण ने मानवकल्याणार्थ भगवद्गीता का उपदेश कर दिया, उसी प्रकार भगवान् राम ने विभीषण के प्रश्न को निमित्त बनाकर, साधकों एवं सभी विजयाकांक्षी लोगों के लिये एक रहस्य खोल दिया है।

भगवान् विभीषण से कहते हैं, ''विभीषण! तुम्हें चिंता करने की आवश्यकता नहीं है -

जेहि जय होइ सो स्यंदन आना।

देखो विभीषण! रावण रथ में बैठकर आया है, लेकिन विजय प्राप्त करने के लिये केवल इतना ही पर्याप्त नहीं होता है। मेरे पास भी एक रथ है; इन आँखों से नहीं दिखता है। यह वही रथ है जिसमें बैठकर व्यक्ति अपने जीवन के संग्राम में विजय प्राप्त कर सकता है।'' और यहाँ से भगवान् ने जीवन में संघर्ष करते हुए मनुष्य विजय कैसे प्राप्त कर सकता है; इसके सारे सूत्र हम लोगों को प्रदान कर दिये हैं।

तीन स्तर के युद्ध

अब इन सूत्रों पर दृष्टिपात करते हुए एक बात ध्यान में लेनी चाहिये कि भगवान् यद्यपि लंका के रणांगण के युद्ध के बारे में बोल रहे हैं, लेकिन एक

युद्ध, हमारे भीतर अनेक परिस्थितियों के साथ चल रहा है। इन परिस्थितियों के साथ युद्ध करते समय हम लोग कभी हार जाते हैं, कभी जीत जाते हैं। साधक भी कभी हारता है, कभी जीतता है। कौन हारता है, कौन जीतता है? जो स्वयं अपनी प्रतिरोधकशक्ति को ठीक रखता है, वह जीतता है और जिसकी वह क्षमता घटती जाती है, वह हारता जाता है।

इस प्रकार का युद्ध हमारे भीतर भी चला है, यह हमें प्रतीत भी नहीं होता। कभी कोई छूत की बीमारी आ गई। विगत में हमारे देश में चिकुनगुनिया नाम का रोग आ गया था। कुछ लोग बहुत बीमार हो गये, लेकिन उसी समय उन्हीं के परिवार के, आसपास के अनेक लोग, बीमारी से बच गये। कुछ लोग बीमार हो जाते हैं, बहुत कष्ट भुगतते हैं और कुछ लोग बीमारी से बचे रहते हैं। इसका क्या कारण है? हम वैद्यकशास्त्र से पूछते हैं तो एक बात का पता चलता है। जिनकी कोशिकाओं में प्रतिरोधक क्षमता अधिक है उनके ऊपर उस रोग के कीटाणुओं का प्रभाव नहीं होता और जिनकी वह क्षमता कम हो गई, उनके ऊपर प्रभाव हो जाता है। यह शरीर के स्तर पर हुआ।

जब हम बाहर की परिस्थितियों में हमारे भीतर की प्रतिरोधक क्षमता को ह्रासमान पाते हैं, तो पराभूत हो जाते हैं। और यदि हमारी प्रतिरोधक क्षमता अच्छी रही, तो विजयी हो जाते हैं। एक साधक का संयम बरकरार रहता है तो विजयी हो जाता है।

इस प्रकार (१) शरीर के स्तर पर युद्ध होता है, (२) परिस्थिति के स्तर पर बाहर युद्ध होता है और (३) हमारे मन के स्तर पर साधना करते हुए भी संग्राम चलता रहता है। युद्ध के ये तीन स्तर हैं और इन तीनों में शरीर के स्तर को इससमय छोड़ देंगे, लेकिन परिस्थितियों के साथ चलनेवाला युद्ध और हमारे भीतर मन के समरांगण में चलने वाला युद्ध इन दोनों युद्धों में विजयी होने के लिये उपयोगी क्या-क्या रहेगा, यह सब भगवान् यहाँ पर बतलाते हैं।

भगवान् ने कहा, विभीषण सुनो! ''मैं भी एक रथ में बैठकर आया हूँ।''

भगवान् कहते हैं - मेरे पास भी एक रथ है; जो इन आँखों से नहीं दिखता है। यह वही रथ है जिसमें बैठकर व्यक्ति अपने जीवन के संग्राम में विजय प्राप्त कर सकता है।'' और यहाँ से भगवान् ने जीवन में संघर्ष करते हुए मनुष्य विजय कैसे प्राप्त कर सकता है; इसके सारे सूत्र हम लोगों को प्रदान कर दिये हैं।

जेहि जय होई सो स्यंदन आना।

विजय दिलाने वाला वह रथ कुछ और ही है। एक दिखने वाला भौतिक रथ है और एक दूसरा रथ भी है। यहाँ पर भगवान् ने जो वर्णन किया वह उस रथ का वर्णन था जो हमें दिखाई नहीं देता। अब हम थोड़ा-सा उपनिषदों की ओर चलेंगे।

हमारे उपनिषदकार हमारी देह को भी एक रथ का ही रूपक बनाकर उपदेश करते हैं।

'आत्मानं रथिनं विद्धि,
शरीरं रथमेव तु।
बुद्धिं तु सारथिं विद्यात्,
मन प्रग्रहमेव च'॥

उपनिषद्कार कहते हैं, इस जीवात्मा का प्रवास इस संसार में जो हो रहा है वह एक रथ में बैठकर हो रहा है। यह शरीर ही रथ है। आत्मानं रथिनं विद्धि। जीवात्मा रथी है, शरीर ही रथ है, इंद्रियाँ घोड़े हैं, बुद्धि सारथी है; मन लगाम है। ऐसे रथ में बैठकर जीवात्मा अपने जीवन का प्रवास करता है। उपनिषद्कार भी इस शरीर को रथ का ही रूपक देकर वर्णन करते हैं और स्वयं भगवान् श्रीराम भी अपने सद्गुणों का वर्णन एक रथ का रूप देकर साकार करते हैं। भगवान् ने कहा-

'सौरज धीरज तेहि रथ चाका।
सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका'॥

जीवन के संग्राम में, चाहे वह बाहर की परिस्थितियों के साथ हो अथवा हमारे भीतर के विकारों के साथ, **विजय प्राप्त करने के लिये किस प्रकार के रथ में बैठकर चलना है, इस बारे में हम आगामी अंकों में देखेंगे।**

(क्रमशः)

युव-उद्‌बोधन

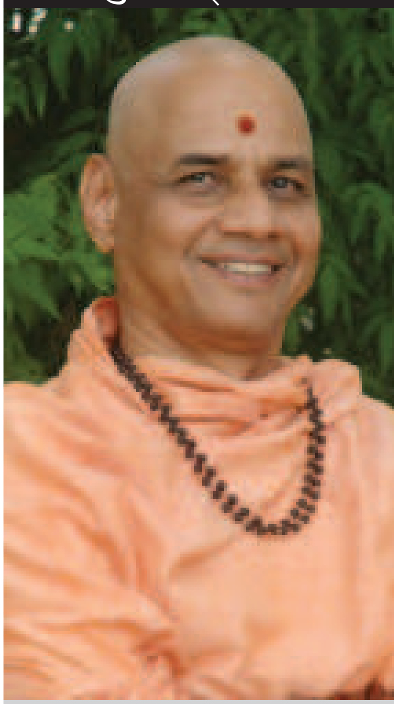

एकाग्रता में छिपी है जीवन की सफलता

सभी को लगता है - पुस्तक रात में सिरहाने रखकर सोऊँ और उसमें वर्णित ज्ञान मेरे मस्तक में आ जाए तो कितना बढ़िया हो? कठिनाई यह है कि पुस्तक पढ़ने का प्रयास करता हूँ तो उस पुस्तक में मेरा मन नहीं लगता। पुस्तक तो सामने होती है, लेकिन उसके पन्नों पर कुछ और ही दिखाई देता है। चित्त एकाग्र नहीं होता। इसलिए मित्रो! पुस्तकों के ऊपर केवल दृष्टि घुमाते रहने से सबकुछ प्राप्त नहीं हो जाएगा। चित्त एकाग्र करना पड़ेगा। जिस एक कला ने संसार में महानता और छोटेपन में अंतर निर्माण कर दिया, वह एकमात्र कला है- **एकाग्रता**। जिसने एकाग्र होकर किसी काम को करना सीख लिया, वह अपने सारे साथियों से आगे निकल जाता है। एकाग्र व्यक्ति हमेशा आगे जाता है। Get focussed आप लोगों का कार्य तो पढ़ना और श्रवण करना होता है। यह कला आपको सीखनी चाहिए।

मनुष्य का मन दो बातों से एकाग्र होता है- यदि किसी में प्रेम होगा; तो मन एकाग्र होता है और भय से भी एकाग्र होता है। जब परीक्षा नजदीक होती है, तब मन एकाग्र होता है। यदि यही अवस्था हमारे मन में पहले से बने, हमारे पढ़ने की एक योजना बनाई जाय, तो हमारा पढ़ना आसान हो सकता है। ऐसी योजना बनानी चाहिए कि मैं जो पढ़ूँगा, उसको याद भी कर सकूँगा। हमारे पढ़ने में अगर कुछ उद्देश्य होगा, तो वह पठन अपने आप गहराई से होगा। यदि एकाग्रता से पढ़ना आप सीखना चाहते हैं, तो एक बात आपको अवश्य समझनी चाहिए कि जब पुस्तक पढ़ें, तो उसका एक अध्याय पढ़ने के बाद पुस्तक रख दीजिए और याद कीजिए कि हमने क्या पढ़ा है और उसको थोड़ा लिखने का प्रयास कीजिए। प्रमुख बिंदुओं को लिखिए। परिणामस्वरूप अगले अध्याय की पढ़ाई गहराई से होगी। एक समय ऐसा आयेगा कि एक अध्याय पढ़ने के बाद वह पूरा अध्याय आप न देखते हुए भी लिख सकेंगे।

जिस एक कला ने संसार में महानता और छोटेपन में अंतर निर्माण कर दिया वह एकमात्र कला है- एकाग्रता। जिसने एकाग्र होकर किसी काम को करना सीख लिया तो, वह अपने सारे साथियों से आगे निकल जाता है।

पढ़ने की विधि :-

यदि आप ऐसा सोचते हैं कि मैं धीरे-धीरे पढ़ूँगा तो ज्यादा पढ़ सकूँगा, तो वह गलत है। जो पहली बार पढ़ता है, वह ज्यादा अच्छा पढ़ता है। लेकिन संभल के पढ़ना। ऐसा नहीं कि केवल दृष्टि दौड़ाना।

दृष्टि दौड़ाना पढ़ना नहीं होता। हमारा मन भी उसके साथ एकरूप होना चाहिए। आप वेग से पढ़ने का और उसमें डूबने का प्रयास करेंगे तो सारी बातें जो पढ़ी हैं; वे भीतर प्रवेश करती जायेंगी।

१) प्राणायाम का महत्त्वः-

यदि आप अपने मन को एकाग्र करना चाहते हैं, तो आपको प्राणायाम का अभ्यास करना चाहिए। आपका मन बिना प्राणायाम किये एकाग्र नहीं हो सकता। प्राणायाम करके बैठेंगे, तो अपने आप मन एकाग्र होगा। हम लोगों ने तो इसका सारा प्रशिक्षण हमारे बचपन में पूजापाठ से पाया। पूजा करते हैं तो सबसे पहले प्राणायाम करना पड़ता है, उसके बाद गायत्री का जप। यह सारा प्रशिक्षण हमारे गुरुकुलों में इसलिए दिया जाता था कि छात्र की मेधा जाग्रत हो जाय। वह अल्पावस्था में ही अत्यंत श्रेष्ठ विद्वान बन जाए। २८ साल का, ३० साल का हो गया और पढ़ ही रहा है। "At the most, at the age of 22, you must finish your education. At the same time, you should be expert in that particular subject" गहराई से पढ़ने के लिए प्राणायाम से बहुत लाभ होता है।

२) लगातार लंबे अध्ययन से बचें :-

एक बात और भी है पढ़ने के बारे में। एक समय बैठकर के बहुत ज्यादा पढ़ लेंगे, तो वह ध्यान में नहीं रहता। उसके साथ कुछ अंतराल (break) रखने चाहिए। Gap रखने पड़ेगें, तो अपने Brain cells को उसे ग्रहण करने के लिए, उसको स्थिर करने के लिए, समय मिलता है। इसलिए घंटा, दो घंटा पढ़ें, फिर थोड़ा-सा अन्य काम कीजिए; मनोरंजन अथवा अन्य दैनिक काम कीजिए। थोड़ा अन्तराल लेकर हम पढ़ेंगे; तो वह सारा का सारा हमारे भीतर उतरता जायेगा।

३) ग्रंथों से मित्रभाव रखेंः-

एक बड़ी पुस्तक को देखते ही डर लगता है, उसे कैसे पढ़ूँगा? अतः ग्रंथों के साथ मित्रता करना। ग्रंथ के साथ ही हम थोड़ा-सा परिचय करना चाहेंगे,

> ***वास्तव में एकाग्रता से पढ़ना अगर आप सीखना चाहते हैं, तो एक बात आपको अवश्य समझनी चाहिए कि जब पुस्तक पढ़ें, तो उसका एक अध्याय पढ़ने के बाद पुस्तक रख दीजिए और याद कीजिए कि हमने क्या पढ़ा है उसको थोड़ा लिखने का प्रयास कीजिए। प्रमुख बिंदुओं को लिखिए। परिणामस्वरूप अगले अध्याय की पढ़ाई गहराई से होगी।***

तो पहले के शीर्षक, उसके आगे पीछे क्या है, थोड़ा-थोड़ा देखते गये, तो उसकी स्थूल समझ आयेगी। तत्पश्चात् एक-एक विभाग की गहराई। ऐसे करेंगे, तो बड़े-बड़े ग्रंथ आप पार कर जायेंगे। सारा ज्ञान हमारे भीतर स्थित हो सकेगा। यह सब एकाग्रता के बल पर हो सकता है। एकाग्रता से प्राप्त न हो, ऐसा इस संसार में कुछ भी नहीं। स्वामी विवेकानंद हो, स्वातंत्र्यवीर सावरकर हो, चाहे आइनस्टाईन हो, इन सब महान लोगों ने अपने-अपने क्षेत्र में एकाग्रता से ही श्रेष्ठता प्राप्त की थी।

४) शरीर स्वस्थ रहे तो मन एकाग्र रहेगाः-

यह सब करने के लिए हम स्वस्थ रहें। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, तो एकाग्रता सध जायेगी। पढ़ाई के साथ कुछ व्यायाम करें। आप घूमने जाते हैं या कुछ थोड़ा बहुत व्यायाम करते हैं, इतना नहीं चलेगा। युवावस्था में जो मनुष्य व्यायाम नहीं करता, उसे बीमारी में अपना समय गंवाना पड़ता है। इसलिए व्यायाम के माध्यम से, चाहे सूर्यनमस्कार हो, भ्रमण हो, दौड़ हो, योगाभ्यास हो, जो आपको अनुकूल लगे, आप कीजिएगा। इसमें किसी को आग्रह करने की आवश्यकता नहीं है। मैंने सिर्फ प्राणायाम का आग्रह किया। लेकिन कोई तो व्यायाम आपके जीवन में अवश्य होना ही चाहिए। शरीर स्वस्थ रहेगा तो हमारा मन भी स्वस्थ रहेगा। Sound mind in a sound body, not in a round body. शरीर स्वस्थ रहे, तो मन एकाग्र रहेगा।

५) सबसे अच्छा है स्वप्रबंधन :-

मुझे यह भी कहा गया कि समय के प्रबंधन के बारे में भी मैं कुछ बोलूँ। Time management, यह कोई वस्तु नहीं है। २४ घंटों का समय होता है। सबके पास

२४ घंटे ही हैं। चाहे जो भी व्यक्ति हो, किसी के पास २४ घंटों से १ मिनट भी ज्यादा नहीं है। All management is afterall self management, self orga-nisation. हम अपने आपको कितना संवारते हैं, यह देखना जरूरी है। मिले हुए इस समय का उपयोग करते हुए, हमें कुछ बातों का नित्य अभ्यास करना चाहिए। यह कठिन बात नहीं है। जितनी भी बातें मुझे करनी है, चाहे इस सप्ताह में, चाहे इस महीने में, चाहे आज करनी हैं, उन बातों को मैं सीखता हूँ क्या? मेरी कुछ कार्यसूची होती है क्या? मेरा प्रयास क्या है? यह मैं देखता हूँ क्या? मेरी प्राथमिकताओं के क्रम से मैं प्रतिबद्ध होता हूँ कि नहीं? इन बातों का ध्यान रखना ही समय का व्यवस्थापन होता है। हमारे शास्त्रों में इस विषय की बहुत सारी बातें कही गई हैं। मैं आपको महाभारत का एक श्लोक सुनाता हूँ प्रबंधन विषयक। सब कुछ आपको इस श्लोक में प्राप्त होगा।

निश्चित्य यः प्रक्रमते
नान्तर्वसति कर्मणः।
अवध्यकालो वश्यात्मा
स वै पण्डित उच्यते।।

यदि हमें एक महान लक्ष्य प्राप्त करना है, तो ध्येय की निश्चिति होनी चाहिए। मन में आता है कि मैं दिनभर टी.वी. देखूँ, Chatting करता रहूँ, सारा दिन अगर इसमें फंसे रहे, तो पढ़ने के समय में भी पढ़ने में मन नहीं लगता। हम यह करेंगे तो पढ़ने का काम कब करेंगे? एक बात और याद रखना। आपके द्वारा किया गया एक घंटे का उहरीं या देखी गई दो घंटे की Movie. उसका Screen तो दो घंटे में बंद हो जाता है, लेकिन बाद में मन के पर्दे पर अन्दर का Screen चालू हो जाता है; जो आपको अध्ययन के समय एकाग्र नहीं होने देता। इसलिए जब तक आप पढ़ रहे हैं; तब तक जो बातें आवश्यक हैं, वे ही देखें, दूसरी नहीं।

> **सौ बात की एक बात!**
>
> ***आपके द्वारा किया गया एक घंटे का Chat या देखी गई दो घंटे की Movie. उसका Screen तो दो घंटे में बंद हो जाता है, लेकिन बाद में मन के पर्दे पर अन्दर का Screen चालू हो जाता है; जो आपको अध्ययन के समय एकाग्र नहीं होने देता। इसलिए जब तक आप पढ़ रहे हैं तब तक जो बातें आवश्यक हैं, वे ही देखें, दूसरी नहीं।***

सवेरे उठकर, सबसे पहले कौनसा काम करना चाहिए? शास्त्रकार कहते हैं- आज के दिन का मेरा कार्यक्रम क्या है, Worklist क्या है, उसका पहले निश्चय किया जाय। उसके बाद 'प्रक्रमते'- किस क्रम से करना है, उसकी प्राथमिकता क्या है, शीघ्रता क्या है? उसका क्रम निश्चित करना। नान्तर्वसति कर्मणः। अपने किसी भी काम में समय गंवाना मत। थोड़ा अध्ययन किसी विषय का आज किया, फिर ७ दिन कुछ नहीं पढ़ा, ७ दिन के बाद अगला अध्याय पढ़ा, तो पहले की और इसकी लिंक नहीं रह जाती। हमें जो कुछ करना है, उसका कुछ थोड़ा-थोड़ा हिस्सा रोज किया जाए; तो अपने आप हमारे ज्ञान में वर्धन होता रहेगा। अवध्यकालः- Don't waste your time. 'वश्यात्मा' जब तक मनुष्य स्वयं के ऊपर नियंत्रण नहीं करेगा; तो वह किसी भी अच्छे काम को नहीं कर सकेगा।

मेरी पढ़ाई में जो अनावश्यक है, उसकी ओर मैं ध्यान ना दूँ। Mobile से सबसे Connect हो जाता है, लेकिन अध्ययन काल में यह एकाग्रता भंग करने वाला सबसे बड़ा शत्रु है। आपको यह किसी भी काम में अपना मन नहीं लगाने देता।

आप तो निश्चित ही अच्छे छात्र हैं। आपने यहाँ बहुत ज्ञान प्राप्त कर लिया है। मैं यहाँ आपका अभिनन्दन करने के लिए आया हूँ। आप तो महान छात्र हैं ही। लेकिन मैं भी एक छात्र हूँ। इसलिए छात्र को अपना व्यवहार कैसा रखना चाहिए, यह मेरे चिंतन की कुछ बातें मैंने आपके सामने रखीं। इस माध्यम से मैंने मेरा भी चिंतन कर लिया। जो विचार आपको अच्छे लगे, उन्हें स्वीकार करना, जो ठीक न लगे उसे यहीं छोड़ देना।

पूर्णयोग बोधिनी गीता (४)

व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक संतुलन की अनिवार्यता

मनन योग्य बिन्दु

प्रस्तुत लेखमाला में परम पूज्य गुरुदेव ने बताया है कि:-

- **केवल आसन-प्राणायाम की क्रियाएं ही योग नहीं है। ये तो साधक को उस मार्ग पर आगे बढ़ने हेतु शारीरिक एवं मानसिक रूप से तैयार करते हैं; जबकि सम्पूर्ण जीवन को योगमय बनाने के सूत्र देने वाला ग्रंथ तो केवल भगवद्गीता ही है।**
- **जब हम भगवद्गीता के श्लोकों को एक अलग क्रम से समझने का प्रयास करते हैं, तो ध्यान में आता है कि यह महान ग्रंथ हमें पूरे जीवन की सिद्धि का, जीवन की सफलता का, परमात्मा से मिलन का पूरा ''रोड-मेप'' प्रदान करता है।**
- **श्रीमद्भगवद्गीता में ही समग्र योग का विश्लेषणात्मक विवेचन है।**

भगवद्गीता योग शास्त्र है। योग शब्द के द्वारा जितने भी अर्थ ध्वनित होते हैं, उन सभी अर्थों का समावेश करने वाला एकमात्र ग्रंथ श्रीमद्भगवद्गीता ही है। भगवद्गीता के हर अध्याय के अंत में आनेवाली पुष्पिका में भगवद्गीता को योगशास्त्र कहा भी गया है और इसीलिये हम इस दृष्टिकोण से भगवद्गीता की ओर देख रहे हैं कि पूर्व में जिस सर्वोच्च अवस्था का वर्णन हम लोगों ने दूसरे अध्याय से लेकर सुना, उस अवस्था तक पहुँचने के लिये सोपान परंपरा से सीढ़ी-दर-सीढ़ी चढ़ते हुए उस अवस्था तक कैसे पहुँचा जा सकता है, ये आरंभ में देखा। मुझे सातवीं मंजिल पर जाना है, लेकिन जब आरंभ करता हूँ तो मुझे पहली मंजिल से आरंभ करना होता है। कौनसी मंजिल पर पहुँचना है, ये मन में पहले तय होता है। लेकिन वो जो भी मंजिल होगी, उस पर चढ़ना आरंभ करना पड़ता है पहली सीढ़ी से। और एक विशेष बात ये है कि एकाध व्यक्ति का विचार लेकर के चलनेवाला ग्रंथ नहीं है भगवद्गीता; अपितु संपूर्ण मानव जाति को, मनुष्य मात्र को ध्यान में रखकर चलने वाला ग्रंथ है। अर्जुन तो निमित्त है। अर्जुन के निमित्त से प्राप्त होनेवाला यह ज्ञान हम सब के लिये है। अर्जुन हमारे प्रतिनिधि हैं। यदि पूरे समाज को, पूरी मानवजाति को उस अवस्था तक पहुँचना होगा, जिसका वर्णन पूर्व में हम लोगों ने सुना, तो मुख्य बात पहले ये है कि समाज की स्थिरता पहले निश्चित होनी चहिये।

व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक संतुलन

हम परिवार के अंग हैं, परिवार समाज का अंग है, समाज

राष्ट्र का अंग है और राष्ट्र मानव जाति का अंग है। इसलिये भगवद्गीताकार ये नहीं बोलते कि बस एक व्यक्ति वहाँ पर पहुँच गया। पहुँचेगा तो एकाध ही, लेकिन उस एकाध व्यक्ति के पहुँचने के लिये भी सबसे पहले समाज में एक स्थिरता का वातावरण होना चाहिये। सामान्य जीवन उसके अनुकूल होना चाहिये। ''गीता संदेश'' यदि आप लोगों ने देखा होगा, तो उसमें एक वाक्य मैने लिखा है। वो वाक्य भगवद्गीता के सार के रूप में ही लिया है - ''व्यक्तिगत संतुलन को योग कहते हैं और सामाजिक संतुलन को धर्म।'' धर्म यह applied योग है। अतः भगवान् भगवद्गीता का मोक्षानुगामी उपदेश करते समय भी, योग के लिये उपयोगी उपदेश करते हुये भी, समाज की वर्तमान स्थिति की उपेक्षा नहीं करना चाहते। और समाज की वर्तमान स्थिति अच्छी कब रहेगी? वो तब रहेगी जब हर व्यक्ति अपना-अपना कर्म ठीक करेगा। एक घर अच्छा कैसे चलता है? एक घर अच्छा तब चलेगा, जब पिताजी कमा करके लाते है, माँ रसोई बनाती है, बालक पढ़ते हैं, माँ को सब लोग सहयोग भी करते हैं समय समय पर। बच्चे से कहा गया कि तुम बाजार से तरकारी लेकर आओ, वो लेकर आया, ये सब मिल करके जब अपना-अपना काम ठीक से करेंगे, तब घर ठीक चलेगा। यह जो बात एक घर के लिये है, ठीक वही बात आप समाज के लिए देखेंगे।

सभी के लिये काम का बंटवारा किया हुआ है। कार्य के इस विभाजन के पश्चात, सभी से अपेक्षा यही होती है कि ये काम ठीक से चलाना हो; तो हम लोगों को अपना-अपना काम ठीक से करना चाहिये। हर व्यक्ति जब अपना-अपना काम ठीक से करेगा, तो कुल मिला करके सबका काम ठीक होगा। इसलिये हर व्यक्ति को अपना-अपना कर्म करने के लिये आग्रही होना चाहिये। इससे परिवार चलता है, संस्था चलती है, इससे शिविर चलता है, संगठन चलता है और इससे राष्ट्र भी चलता है।

धर्म की तात्विक विवेचना

जहाँ चार लोग इकट्ठे होंगे, वहाँ पर आपको इसी

योग साधना में सफल होने हेतु व्यक्तिगत, पारिवारिक तथा सामाजिक सामंजस्य एवं संतुलन आवश्यक है और गीता हमें यही सिखाती है।

पद्धति को अपनाना पड़ेगा। और इसीलिये भगवान् अर्जुन के निमित्त से हम सब लोगों के लिये एक आदेश देते हैं:

**''नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मण:।।**

अर्जुन, तुम्हें कर्म करना चाहिये। तुम अपना काम करो। कर्म करना चाहिये- इसका अर्थ कोई भी काम नहीं; अपितु तुम्हारे लिये जो निर्धारित काम है, वही काम तुम्हें करना चाहिये। और इसलिये भगवद्गीता में शब्द आता है ''धर्म''! यह शब्द भगवद्गीता में, महाभारत में, रामायण में, जहाँ भी आएगा, उसका अर्थ हमको ठीक से ध्यान में आना चाहिये। संस्कृत भाषा में, 'धर्म शब्द का अर्थ है 'कर्त्तव्य'। तो स्वधर्म शब्द का अर्थ क्या होगा? मेरा कर्त्तव्य, मेरी duty, मुझे जो काम सौंपा गया है, वह मेरा धर्म है।

एक बात ध्यान में रखनी चाहिये। धर्म शब्द का अंग्रेजी में कोई अनुवाद नहीं हो सकता। धर्म शब्द के लिये अंग्रेजी में कोई विकल्प नहीं है; क्योंकि धर्म के अंतर्गत इतने भाव समाविष्ट हैं कि वो अंग्रेजी के किसी भी शब्द से अभिव्यक्त नहीं हो सकता। देखो, हर भाषा के शब्द, जिस-जिस संस्कृति में निर्माण होते हैं, उस संस्कृति के अनेक भाव उस शब्द के साथ चिपक जाते हैं और इसलिये उन सारे भावों को अभिव्यक्त करने वाला शब्द, अन्य भाषा में उपलब्ध हो ही, ये आग्रह रखा भी नहीं जा सकता। जैसे, मैं एक वाक्य बोलता हूँ, आप उसका अनुवाद कीजिये। अंग्रेजी के जानकार हैं आप लोग। एक वाक्य सादा- ''मैने अपने पिताजी को पिंड प्रदान किया।'' अब इसका अनुवाद अंग्रेजी में करो। सब विद्वान हैं। आप अंग्रेजी अच्छी तरह जानते हैं, और जब 'पिंडप्रदान' मैंने कहा तो क्या कहा ये आपके ध्यान में आ गया। अब इस पिंड शब्द

के लिये अंग्रेजी में कौनसा शब्द है? Can you call it riceball? 'पिंड' कहते ही, मेरे मन में जो भावनाएँ उमड़कर आती हैं मेरे पिताजी के लिये, मेरे पूर्वजों के लिये, मेरी जो कृतज्ञता जगती है, वह riceball से नहीं जगती है। जो बेटा अपने पिताजी को 'पिंड प्रदान' नहीं कर पाता है, उसको क्लेश होता है, दु:ख होता है कि मैंने क्यों नहीं किया। इस पिंड के लिये अंग्रेजों के लिये कोई परिचय ही नहीं। जैसे ये बात है, उसी प्रकार धर्म की बात है। यदि आप धर्म शब्द का अनुवाद, 'relegion', ही करना चाहेंगे, तो क्या आफत आएगी, जरा सोचिये। मैं आप ही को प्रश्‍न पूछता हूँ। संस्कृत भाषा में शब्द आते हैं। संस्कृत भाषा के कारण अपनी भाषा में भी आते है। प्रादेशिक भाषाओं में भी आते हैं। शब्द आया- 'पुत्र धर्म', अब करो अनुवाद। यदि धर्म शब्द का अनुवाद आप 'relegion' ही करते है, तो 'पुत्र धर्म' का अर्थ क्या होगा? 'राजधर्म' का अर्थ क्या होगा? 'प्रजाधर्म' का अर्थ क्या होगा? लेकिन आपके मन में कोई संभ्रम नहीं है। आपको पता है। 'पुत्र धर्म' कहने पर उसका अनुवाद तो आप duty of son यहीं करेंगे। बेटे का कर्त्तव्य क्या है? राजधर्म कहने पर राजा का कर्त्तव्य क्या है? 'प्रजा धर्म' कहने पर प्रजा का कर्त्तव्य क्या है? यही कहेंगे आप। लेकिन 'धर्म' शब्द को जब अलग निकालकर के बोलते हैं न, तब आप उसको बना देते है relegion, इसलिये धर्म शब्द का मूल अर्थ है कर्त्तव्य! अब ये 'कर्त्तव्य', हमारी जिस प्रकार की सामाजिक परंपरा से निर्धारित है; उसकी बारीकियों में जाता नहीं मैं। लेकिन भगवान् का आग्रह ये है कि ये जो तुम्हारा सामाजिक कर्त्तव्य है, पारिवारिक कर्त्तव्य है, तुम्हें सबसे पहले उसे निभाना चाहिये।

**''नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मण:।
शरीर यात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मण:।।**

इसके पीछे भी भगवान्, दूसरे अध्याय में अर्जुन को समझाते हैं-

**स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि।
धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते।।**

एक विशेष बात ये है कि एकाध व्यक्ति का विचार लेकर के चलनेवाला ग्रंथ नहीं है भगवद्‌गीता; अपितु संपूर्ण मानव जाति को, मनुष्य मात्र को ध्यान में रख करके चलने वाला ग्रंथ है।

दो धर्मों के मध्य चयन की समस्या

बार-बार भगवान् एक ही बात कह रहे हैं कि तुम्हें अपने धर्म का अर्थात् तुम्हारे सामाजिक कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिये। एक बात और बतला देता हूँ; जो आपके ध्यान में आनी चाहिये। अर्जुन के सामने जो समस्या है, वो समस्या धर्म और अधर्म के बीच में चयन करने की नहीं है। धर्म और अधर्म के बीच में चयन करना हो, तो अर्जुन इतना तो बुद्धिमान है ही कि वो तो धर्म को ही चुनेगा। भगवद्‌गीता के प्रथम अध्याय में अर्जुन ने जिस ढंग से अपनी समस्या को रखा है और दूसरे अध्याय के भी आरंभ में उसी बात को वो आगे घसीटता है, वह धर्म और अधर्म के बीच में चयन करने की बात ही नहीं है; बल्कि वो दो धर्मों के बीच में चयन करने की बात है।

एक धर्म है अर्जुन का 'व्यक्तिगत धर्म' और दूसरा है 'सामाजिक धर्म'। व्यक्तिगत कर्त्तव्य और सामाजिक कर्त्तव्य, इनमें संघर्ष है। अर्जुन के सामने की समस्या साफ है। अर्जुन क्षत्रिय योद्धा के रूप में, कवचादिक धारण करके रथ में बैठ कर युद्ध करने के लिये आया है। क्षत्रिय होने के नाते अब युद्ध करना उसका धर्म है, लेकिन आने के बाद जब अर्जुन ने देखा कि अरे! मेरे सामने तो मेरे गुरुजी हैं, मेरे दादाजी हैं, मेरे मामा हैं, मेरे भाई हैं।

''आचार्यान्मातुलान्भ्रातृन्पुत्रान्पौत्रा-न्सखींस्तथा।

ये सब के सब मेरे संबंधी हैं। इन सबके साथ मेरा व्यक्तिगत संबंध है। मैं किसी का शिष्य हूँ, किसी का पोता हूँ, किसी का भाई हूँ, किसीका भांजा हूँ, किसीका मित्र हूँ, किसी का कोई हूँ। अब जब ये सब मेरे हैं, 'मेरे व्यक्तिगत संबंध इतने अच्छे इन सब लोगों के साथ रहे भी हैं, अब इनको कैसे मारूँ? एक ओर

व्यक्तिगत कर्त्तव्य और दूसरी ओर सामाजिक कर्त्तव्य। संघर्ष ये है। It is conflict between two duties, इसको ध्यान में लीजिए। और ये समस्या हमारे भी जीवन में आती है। बहुत बार आती है, रोज भी आ सकती है। इसमें किसका चयन वरीयतासे करना चाहिये, किसको प्राथमिकता देनी चाहिये, किसको Priority देनी चाहिए? मैं एक सीधी बात बतलाता हूँ आपको, उससे जो नये साधक हैं, उनके भी ध्यान में आ जाएगा।

सीमा पर तैनात एक सैनिक छुट्टी लेकर आया है और अपनी बीमार माँ की सेवा कर रहा है। उसकी माँ के अंतिम दिन हैं, यह बात वह जानता है। उसको समाधान है कि मैं माँ के अंतिम दिनों में उसके समीप हूँ, उसकी कुछ सेवा कर पा रहा हूँ। और अचानक उसके Office से तार आता है war started, join immediately. कश्मीर की सीमा पर युद्ध आरंभ हो गया है। तुरंत लौट आओ। अब उसके मन में संघर्ष निर्माण होगा कि नहीं, बोलो? मैं माँ की सेवा करूँ या मातृभूमि के लिये दौड़ जाऊँ। ये एक उदाहरण बतलाया है। माँ की सेवा करना भी धर्म है, कर्तव्य है। मातृभूमि की रक्षा हेतु दौड़कर चले जाना भी कर्तव्य है। How to choose and what to choose ?

भगवान् स्वयं अर्जुन के प्रश्न का ये उत्तर देते हैं- जब जब संघर्ष खड़ा होता है, व्यक्तिगत कर्तव्य और राष्ट्रीय कर्तव्य के मध्य, तब राष्ट्र पहले, मैं बाद में। और ये हमारे संपूर्ण धर्म का सार है, ध्यान में रखना।

त्यजेत् एकं कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत्।
ग्रामं जनपदस्यार्थे आत्मार्थे पृथिवी त्यजेत्।।

मेरा विकास और मेरे पूरे परिवार का उत्थान, इनमें जब संघर्ष आता है, चयन का प्रश्न उठता है, ये आपके जीवन में भी आया होगा मेरा व्यक्तिगत Career और मेरे परिवार का उत्थान। ये तो जो बड़े भाई होते हैं न, आप लोगों में जो बड़े रहे होंगे, उनके तो जीवन में बहुत आया होगा। पिताजी बूढ़े हो गये, किसी को कमाने की आवश्यकता है, लेकिन मैं मेरे Career में आगे बढ़ जाऊँ तो मेरी तरक्की बहुत हो सकती है। अब मैं काम कर के अपने छोटे भाइयों की शिक्षा की व्यवस्था करूँ और घर को सँवारू या अपने Career का विचार करके घर का जो होता है वो होने दूँ। आई न समस्या? ये आ गई समस्या। क्या कहते हैं भगवान्? हमारा शास्त्र कहता है, **'त्यजेत् एकं कुलस्यार्थे',** जब-जब मैं और मेरा परिवार; इसमें संघर्ष आता है, तो परिवार पहले और मैं बाद में, ये हो गया धर्म। जब-जब परिवार और समाज; इनके बीच में संघर्ष आता है, तब क्या करना। समाज पहले, परिवार बाद में।

क्रमशः

(आगामी अंक में हम देखेंगे कि अंतरंग में योग का अभ्यास करते हुए अपने कर्म कैसे करें)

डॉ. आशु गोयल सम्मानित

*विकल्प सोसाइटी संस्था द्वारा उत्तर प्रदेश सरकार की कैबिनेटमंत्री श्रीमती रीता बहुगुणा, श्रीमती स्वाति सिंह एवं मनकामनेश्वर मंदिर की महन्त आदरणीय देव्यागिरी जी की गरिमामयी उपस्थिति में गीता परिवार का सम्मान **''अस्तित्व सम्मान २०१७''** डॉ. आशु गोयल **(उपाध्यक्ष एवं उत्तर भारत प्रभारी गीता परिवार)** को प्रदान किया किया गया। ज्ञातव्य है कि डॉ. गोयल अपने नवाचारों तथा हर कार्य को योजना बद्ध रूप से सम्पन्न कर लक्ष्य सिद्धि के लिये प्रसिद्ध हैं। 'धर्मश्री' परिवार की ओर से बधाई।*

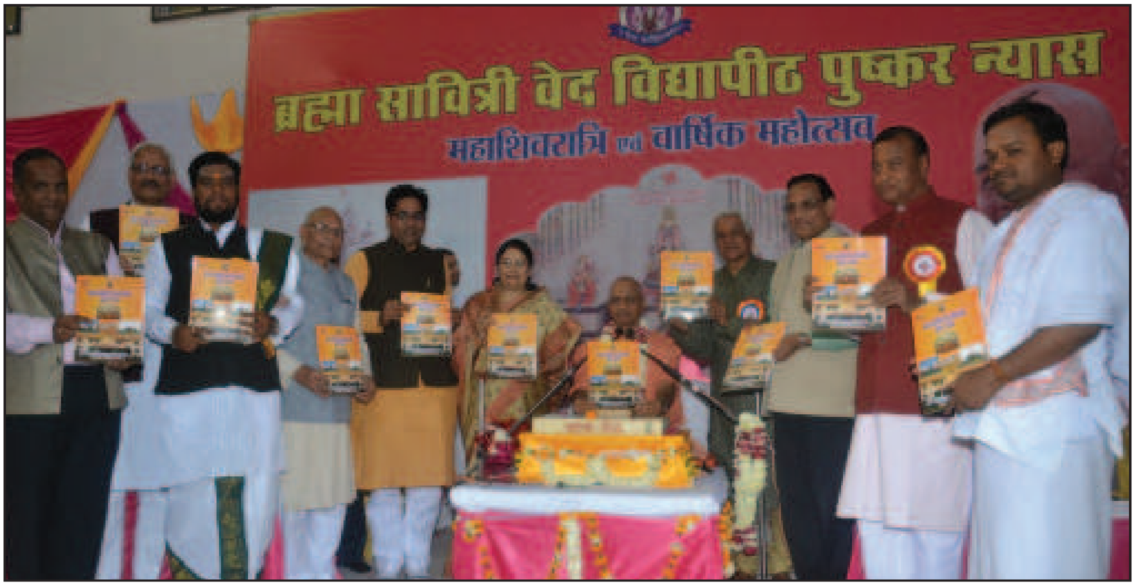

ब्रह्मा सावित्री वेद विद्यापीठ का वार्षिकोत्सव : एक रिपोर्ट

ब्रह्मा सावित्री वेद विद्यापीठ पुष्कर का वार्षिकोत्सव प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी शिवरात्रि महापर्व के अवसर पर हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। तीन दिवसीय इस महोत्सव में प्रतिदिन विद्यावाचस्पति राष्ट्रसन्त परम पूज्य स्वामी श्रीगोविन्ददेव गिरिजी महाराज के प्रवचन हुए। प्रवचन का मुख्य विषय था- ''जीवन संग्राम का विजय रथ।''

प्रथम दिवस दिनांक २२ फरवरी २०१७ को महाराज श्री ने कहा कि शांत एवं सुखमय जीवन जीने के लिये परिवार में धार्मिक वातावरण अति आवश्यक है। जहाँ धर्म है, वहाँ सुख है और जहाँ अधर्म है, वहाँ दुःख है। मानव जीवन एक संग्राम है। इसे जीतने के लिये अर्जुन जैसा योद्धा होना चाहिए।

द्वितीय सत्र में पूज्य स्वामी जी के प्रवचन से पूर्व विद्यापीठ के न्यासी मण्डल के साथ-साथ श्री एस.एस. कोठारी जी (लोकायुक्त, जयपुर), श्री गौरीशंकर जी झंवर (अध्यक्ष-गौरांग वेद विद्यालय, कोलकाता), श्री विनीत जी सर्राफ (न्यासी विद्यापीठ), आदि महानुभावों ने भी स्वामी जी का माल्यार्पण कर आशीर्वाद लिया। प्रवचन में पूज्य महाराज श्री ने कहा कि ईश्वर की उपासना और उनकी वेदमय वाणी की सेवा वेद हमे सन्मार्ग पर चलने हेतु प्रेरित करते हैं। वेद हमे धर्म-कार्य में प्रवृत्त होने के उपाय बताते हैं। इसलिये वेद की रक्षा स्वयं की रक्षा है।

प्रवचनोपरान्त विद्यापीठ में अध्ययनरत ८० छात्रों में से जिन्होंने अलग-अलग स्पर्धाओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया था, उन्हें पूज्य महाराज जी, श्री एस.एस. कोठारी जी एवं श्री आनन्द जी राठी के द्वारा मंच पर सम्मानित किया गया। इसी क्रम में वेदाचार्य - वेदमूर्ति श्री महेश जी नन्दे, श्री वैभव जी जोशी, श्री ब्रजेश जी तिवारी, श्री कमल जी जोशी, श्री प्रदीप जी कुलकर्णी, संस्कृत शिक्षक - डॉ. ब्रज बिहारी जी पाण्डेय, आधुनिक शिक्षक श्री भवानी शंकर जी पाराशर आदि को उत्तम शिक्षण कार्य के लिये मंच पर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री सद्गुरु निजानंद महाराज वेद

विद्यालय, आलंदी के प्रधानाचार्य वे.मू. श्री भगवान् जी जोशी, संत ज्ञानेश्वर वेद विद्यालय- वृन्दावन के प्रधानाचार्य वे.मू. श्री संतोष जी महापात्रा, स्वामी सत्यमित्रानन्द वेद विद्या केन्द्र- सूरत के प्रधानाचार्य वे.मू. श्री रामकरण जी शर्मा तथा पुरी वेद विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री दिवाकर माहापात्रा जी का सम्मान भी उत्तम वेदसेवा के लिये किया गया।

वार्षिकोत्सव का मुख्य कार्यक्रम सायंकाल तीन बजे से प्रारम्भ हुआ। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष-जस्टिस श्री. एस. एस. कोठारी (लोकायुक्त, राजस्थान), मुख्य अतिथि श्रीमती किरण जी माहेश्वरी (उच्च शिक्षा मंत्री, राजस्थान सरकार) तथा विशिष्ठ अतिथि - श्रीरामकुमार जी भूतड़ा (कोषाध्यक्ष, भा.ज.पा., राजस्थान), श्री सुरेश सिंह जी रावत (संसदीय सचिव - राजस्थान) एवं श्री कमल जी पाठक (अध्यक्ष, नगर पालिका, पुष्कर) थे।

मुख्या अतिथि श्रीमती किरण जी माहेश्वरी द्वारा वेदमन्त्र पाठ पूर्वक दीप प्रज्ज्वलन से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। इसके बाद श्रीमती माहेश्वरी जी ने सरस्वती पूजनोपरान्त वेद-पूजन कर पूज्य महाराज जी से आशीर्वाद ग्रहण किया। इस मौके पर विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित स्मारिका का विमोचन पूज्य महाराज जी एवं श्रीमती माहेश्वरी जी के द्वारा किया गया।

श्रीमती किरण माहेश्वरी जी ने अपने वक्तव्य में विद्यापीठ की प्रशंसा करते हुए कहा कि वेद एवं वेदांग की सेवा में संलग्न इस तरह का विद्यापीठ दुर्लभ है।

इस प्रकार मुख्य अतिथि महोदया के उद्बोधन के पश्चात् कार्यक्रम के अध्यक्ष श्रीमान् एस.एस. कोठारी जी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए विद्यापीठ द्वारा की गयी सेवाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की। अध्यक्षीय उद्बोधन के पश्चात् विद्यापीठ के आदर्श छात्र चि. जगदीश चन्द्र व्यास को मंच पर सम्मानित किया गया।

परम पूज्य महाराज जी ने सबको सम्बोधन करते हुए कहा कि विद्यापीठ के इस वार्षिकोत्सव में वर्षों पहले विद्यापीठ के प्रति की गयी सारी कल्पनायें आज साकार होती हुई नजर आ रही है। तत्पश्चात् श्री अशोक जी कालानी ने आभार ज्ञापन किया। मंच संचालन श्री संदीप जी झंवर ने किया।

- डॉ. ब्रज बिहारी पाण्डेय

प.पू. गुरुदेव के सप्तषष्टि वर्षपूर्ति निमित्त रक्तदान शिविर का आयोजन

खामगांव, दिनांक १६-०१-२०१७ से दिनांक १८-०१-२०१७ तक स्थानीय केला हिन्दी माध्यमिक विद्यालय में जय जगदंबा वेदविद्यालय, घाटपूरी खामगांव के तत्त्वावधान में परमपूज्य स्वामी श्री गोविंददेव गिरिजी का 'महाभारत संदेश' विषयक प्रवचन का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का समापन दिवस दिनांक १८-०१-२०१७, बुधवार को विद्यालय प्रांगण में ही परमपूज्य स्वामीजी के सप्तषष्टि वर्ष पूर्ति के अवसर पर विशाल रक्तदान शिविर के रूप में किया गया; जिसमें कुल ८७ रक्तदान दाताओं ने रक्तदान किया। पूज्य महाराजश्री ने स्वयं शिविर स्थल पर भेंट देकर सभी रक्तदानदाताओं का अभिनंदन किया।

कॅनडा में माउली की मूर्ति विराजमान् ।

– डॉ. प्रकाश सोमण

चैत्र कृ. एकादशी, रविवार, दि. २३ एप्रिल २०१७ यह दिन न केवल संत श्री ज्ञानेश्वर गुरुकुल के अपितु संपूर्ण भारतीय सांस्कृतिक जगत् के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाएगा। क्योंकि इसी दिन श्रद्धेय विद्यावाचस्पति आचार्य स्वामी गोविंददेव गिरिजी (हम सभी के पूज्यवर) के पवित्र करकमलोंद्वारा संतश्रेष्ठ श्री ज्ञानेश्वर महाराज के मूर्ति की स्थापना सुदूरवर्ती कनाडा देश के टोरोंटो महानगर के ब्रॅम्पटन उपनगर में स्थित संत ज्ञानेश्वर आश्रम के मंदिर में हुई।

यह स्वर्णिम क्षण पूज्यवर के एक संकल्पपूर्ति का था। छात्रावस्था से ही आपके मन में एक चुभन सी थी कि संत ज्ञानेश्वर महाराज सर्वोपरि अत्युच्च कोटि के दार्शनिक, संत, कवि होने के उपरान्त भी उन्हें-विश्व में तो छोडिये, भारत में भी यथार्थ रूप से जाना नहीं जाता। मुख्य कारण है उनके वाङ्मय का मराठी में होना तथा उनकी सर्वांगीण जानकारी हिन्दी भाषकों को देने के प्रयत्नोंका अभाव।

इन कमीयोंको दूर करने हेतु पूज्यवर ने पिछले कई दशकों से प्रवचन, प्रकाशन आदि रूपों में जैसे देश में प्रयास किए, उसी प्रकार विदेशों में संचार प्रारंभ होने के पश्चात् कनाडा के टोरोंटो महानगर के ब्रॅम्पटन उपनगर में संत ज्ञानेश्वर आश्रम की स्थापना के पश्चात् वहाँ अन्य देवताओं की मूर्तियों के साथ संत ज्ञानेश्वर महाराज की केवल तसवीर रखी गयी। आपके निर्देशानुसार ही आश्रम की सभी प्रवृत्तियाँ चल रही हैं यह देखकर पूज्यवरने वर्ष २०१६ में आश्रम में संत ज्ञानेश्वर महाराज की रजत पादुकाओंकी स्थापना की। और इस वर्ष २३ अप्रैल के दिन उनकी प्रतिमा जयपुर में संगमरमर में करवाकर वहाँ स्थापित की। इस मूर्ति के निर्माण एवं उसे कनाडा पहुँचाने का संपूर्ण श्रेय कोलकाता के समर्पित माउली भक्त श्री. शिवरतनजी मोहता को जाता है।

मूर्तिस्थापना के तीन दिन पहलेसे ही मंदिर के अर्चकों द्वारा विविध पूजाएँ सम्पन्न हुई थी। २३ अप्रैल को प्रात:काल में ही पूज्यवर की अगवानी में मंदिर परिक्रमा सम्पन्न हुई। तत्पश्चात् अर्चकोंद्वारा न्यासादिक अन्यान्य संस्कारों के पश्चात् सभी उपस्थितों को माउली के प्रथम दर्शन हुए। मूर्ति इतनी सुंदर एवं प्रसन्न है कि सभी लोगों में मूर्ति के साथ छवि लेने की होड सी लग गयी।

इसके पश्चात् पूज्यवर ने सभी को संबोधित करते हुए इस ऐतिहासिक घटना का महत्त्व विशद किया। इस हृदयस्पर्शी समारोह का समापन उतनाही हृदयस्पर्शी रहा। उपस्थित श्रद्धालुओं में से ही अनेक परिवारकी, बालिकाओंने सजधज कर वारकरी परंपरानुसार निकलनेवाली 'दिंडी' का पारंपरिक संगीत के तालपर मंचन किया। मराठी भाषा के अभंग गायन एवं 'पुंडलीक वरदा हरि विठ्ठल, श्री ज्ञानदेव-तुकाराम, पंढरिनाथ महाराज की जय।' जैसे उद्घोषणाओंने मानो सभी उपस्थितों को विदेशभूमि ब्रॅम्पटन से उठाकर इंद्रायणी-चंद्रभागा नदीयों के तटपर बिठा दिया। इस उपक्रम को पूरा संयोजन एवं मंचन श्रीमती शुभाजी एवं उनकी सहयोगीयोंने किया। उल्लेखनीय बात यह है कि वे स्वयं अथवा सहभागी बालिकाओं में से कोई भी मराठीभाषी अथवा वारकरी परंपरासे परिचित नहीं था। यदि यह पूज्यवर की संकल्पपूर्तिका प्रारंभ नहीं था तो और क्या था?

संसार में नहीं, स्वयं के दृष्टिकोण में परिवर्तन संभव है!

सामान्यतः मानव की प्रकृति ही ऐसी है कि उसकी निगाह कमी की ओर ही टिकती है। सौ में से ९९ वस्तुएँ होने पर भी सदैव उस एक की ही चर्चा करते हैं; जो उपलब्ध नहीं है अर्थात् सदैव असन्तुष्ट; पर कुछ लोग अलग भी हैं, जो सदैव संतुष्ट दिखते हैं।

हमारे साथ भी यह होता है। सब कुछ अच्छा होता है। बस, एक बात की कमी होती है। किसी भी व्यक्ति से मिलेंगे,तो अपने बारे में बड़ा अच्छा वर्णन करेंगे। ऐसा है, वैसा है। सब कुछ ठीक-ठाक है। फिर धीरे से कहेंगे, 'लेकिन'। ध्यान रखना-जब तक संसार है, तब तक यह 'लेकिन'समाप्त होने वाला नहीं है। किसी भी व्यक्ति के पास जाइये। पहला ३०-४० प्रतिशत वर्णन बड़ा अच्छा चलेगा और बाद में 'लेकिन' का प्रपञ्च खड़ा हो जायेगा। सब कुछ तो अच्छा है महाराज; परन्तु फिर कोई बिजनेस की बात कहेगा, कोई किसी व्याधि की बात कहेगा, घर में कुछ हो गया तो उस प्रसंग की बात कहेगा या फिर फैक्ट्री में कुछ हो गया तो उसकी बात कहेगा या और कुछ न कुछ कहेगा जरूर। उसके भीतर एक **'लेकिन' का अर्थ होता है- 'अपूर्णता'।** ध्यान रखना-संसार का ब्राँड ही अपूर्णता है। संसार पूर्ण हो ही नहीं सकता। कितना भी अच्छा कर लीजिये; जहाँ सांसारिकता है, वहाँ अपूर्णता है। सबकुछ है, पर सबके साथ; 'लेकिन' जुड़ा है। हर एक के साथ 'लेकिन' जुड़ा है।

हम समाज को नहीं बदल सकते, संसार को नहीं बदल सकते। अपनी समझ को बदलना सम्भव है; दृष्टिकोण को परिवर्तित करना सम्भव है। दृश्य नहीं बदलेगा, दृष्टि बदल सकती है और दृष्टि के बदलते ही दृश्य बदल जायेगा।

संसार का ब्राँण्ड ही अपूर्णता है

परिपूर्ण तो केवल एक परमात्मा ही है और परिपूर्णता की अनुभूति केवल वे ही कर पाते हैं; जो उस परमात्मा के साथ एकरूप हो जाते हैं। वे भी परिपूर्ण हो जाते हैं। बाकी सब लोगों को सारा जीवन अपूर्णता में ही जीना पड़ता है। जिस किसी के पास आप जायेंगे, उसकी कोई न कोई शिकायत होगी। बेटी का ब्याह नहीं होता है। बेटे का ऐसे कुछ हो गया, पोता नहीं हुआ, पोता हो गया तो दो पोते हो गये, पोती नहीं हुई। कुछ न कुछ उसका 'लेकिन' बच ही जाता है। संतों के पास जाइये। तुकाराम महाराज से पूछिये। हमलोगों को कभी उतने दुःख झेलने नहीं पड़े, जितने उन्होंने झेले। एक अकाल आया, जानवरों को पीने के लिये पानी नहीं। सारे जानवर मर गये, दिवाला निकल गया। घर में अन्न नहीं। दो पत्नियों में से एक मर गई। पेट भरने के लिये कुछ नहीं। बड़े बेटे से बहुत प्रेम था तुकाराम महाराज का। वह भी चल बसा।

अब उनसे पूछिये संसार कैसा है जी? तुकाराम कहते हैं- **''आनंद कोंडला, मागे-पुढे।''** हम १० साल पुरानी कोई न कोई बात निकालते हुए शिकायत ही करते रहेंगे, आँसू ढारते बैठेंगे। संतों के पास कोई 'लेकिन' 'वेकिन' नहीं है। क्यों? इसका एक ही कारण है कि एक परिपूर्ण परमात्मा के साथ वे एकाकार हो गये। उनके लिये संसार जैसा है, वैसा ठीक है। बाकी लोग तो शिकायत करते ही रहने वाले हैं।

एक सज्जन मिल गये। उन्होंने कहा, ब्रह्मा जी ने भी क्या संसार निर्माण करके रखा है? उनको कोई अच्छा सलाहकार नहीं मिला लगता है। मैंने कहा- क्या हो गया भैया? अरे! देखो न, इतना बढ़िया सोना बनाया, उस सोने में जरा सुगंध भी ला देते तो कितना अच्छा होता, क्यों उसमें कमी रख दी? स्वर्ण में सुगंध की कमी है। तो एक दूसरे ने कहा- बात तो सही है। इतना बढ़िया गन्ना। इतना मीठा भी; लेकिन गन्ने में फल लगता तो कितना अच्छा होता? गन्ने के पेड़ में फल लगता नहीं। तीसरे ने कहा- चंदन की लकड़ी में इतनी सुगंध है; किन्तु यदि उस चंदन के वृक्ष पर फूल खिलते; तो मजा आ जाता। ओह! चंदन वृक्ष के ऊपर फूल खिलता नहीं। **नाकारी पुष्पपं न चंदन विसन।।** विद्वान् है तो सम्पत्ति नहीं। सम्पत्ति अच्छी है, तो 'ऊपर की मंजिल' पूरी खाली है। लोग मान-आदर तो देते हैं बुद्धिमान् कह करके, पर वे होते नहीं हैं। विद्वान् है; तो धन नहीं। धन है, तो विद्वान् नहीं। देखो, हो सकता है एकाध व्यक्ति ऐसा भी हो; जो धनवान भी हो और विद्वान् भी, पर वह जल्दी मर जाता है।

अरे! जिनके रहने से संसार का कुछ भला होने वाला नहीं, ऐसे लोग दीर्घजीवी होकर बैठे रहते हैं। '९० नॉट आऊट'। और जिनके जीने से संसार का कल्याण हो सकता था, वे जल्दी चले जाते हैं। यह संसार अपूर्णता से भरा हुआ है। अपूर्णता ही संसार का ब्रॉण्ड व उसका चिन्ह है। लेकिन ध्यान रखना है कि दृष्टि में भगवान् आकर बैठ जायें, भगवान् का विराजना हो जाय; तो जिस समय जिस प्रकार की अवस्था है, वहाँ पूर्णता आरम्भ हो जाती है- **पूर्णमदः पूर्णमिदम्।** जो भी है, जैसा भी है-ठीक है, बढ़िया है।

> ***संतों के पास कोई 'लेकिन' 'वेकिन' नहीं है। क्यों? इसका एक ही कारण है कि एक परिपूर्ण परमात्मा के साथ वे एकाकार हो गये। उनके लिये संसार जैसा है, वैसा ठीक है। बाकी लोग तो शिकायत करते ही रहने वाले हैं।***

भक्ति के चश्में का परिणाम है शुभ दृष्टि। अरे! जिस रंग का चश्मा लगाते हैं, वैसा ही दृश्य दिखता है। लाल चश्मा लगाने पर सब लाल-लाल दिखता है। हरा चश्मा लगाने पर हरा-हरा दिखता है। अंधेरे का चश्मा लगाने पर सारा अपूर्णता का ही दृश्य दिखता है और श्रीकृष्ण का चश्मा लगाने पर सब पूर्ण ही पूर्ण लगता है। जो है ही। बतलाइये तो, मीरा बाई ने कभी कोई शिकायत की? हमारी तुलना में उन्होंने क्या सुख भोगा? अरे! उसका तो नृत्य चलता रहा। चाहे जग-हँसाई हुई। चाहे जो कुछ भी हुआ, वह तो नाँचती रही- **''राम रतन धन पायो।''**

संतों की भी क्या मौज है!

अब हमारे तीन संतों की पत्नियाँ अलग-अलग ढंग की थीं। भगवान् के दर्शन के लिये संत एकनाथजी महाराज गये। उनकी पत्नी का नाम गिरिजा बाई था। भगवान् ने पूछा- 'कैसे हैं जी'। घर में सब ठीक-ठाक है। बड़ी कृपा ठाकुर! बड़ी कृपा। गिरिजा जैसी पत्नी आपने दी। धर्म-कर्म करने में मुझसे एक कदम आगे है। इतनी बढ़िया पत्नी मुझे मिली। इसलिये मैं परमार्थ-प्रपञ्च सबकुछ कर सका।' वास्तव में गिरिजा बाई संत एकनाथजी महाराज के अनुकूल बनकर रही। बड़ी कृपा।

फिर संत तुकारामजी महाराज दर्शन के लिये आये। उनकी पत्नी एक अलग ही उदाहरण है। एक पत्नी तो अकाल एवं भूख के कारण मर गई; जो बची थी, वह कैसी थी, उसके विषय में मात्र एक ही उदाहरण बतलाता हूँ। 'रात-दिन' तुकारामजी महाराज को खरी-खोटी सुनाती रहती थी। तुकारामजी एक रोज खेत से ८-१० गन्ने घर पर खाने के लिये लेकर आ रहे थे। रास्ते में बच्चों ने कहा- बाबा! गन्ना अच्छा है। महाराज

ने कहा- तुम्हें चाहिए तो ले लो, ले लो। उनके आदेशानुसार बच्चों ने गन्ने ले लिये। मात्र एक गन्ना शेष रह गया। एक भी नहीं बचता, तो आपत्ति नहीं थी; पर एक बच गया। उसको लेकर वे घर आये। पत्नी ने पूछा- क्या एक ही गन्ना लेकर आये? उन्हें झूठ बोलने की आदत नहीं। आफत तो सारी यहाँ पर है। उन्होंने कहा कि 'अरी, जीजा बाई! (उसका नाम था जीजा बाई) लाया तो मैं बहुत था, परन्तु रास्ते में बच्चे मिल गये, उन्हें बाँट दिया। पत्नी झल्लाई, ''बाँट दिये! और एक ही लेकर आये मेरे लिये?'' उसने वही गन्ना उठाया और महाराज की पीठ पर ऐसा मारा कि उसके दो टुकड़े हो गये। तुकारामजी महाराज ने कहा, 'अच्छा है। वैसे भी दो तो करने ही थे, एक तुम्हारे लिये, एक मेरे लिये'। कैसा 'एडजस्ट' किया होगा, सोचिये। यह तो केवल एक प्रसंग है। उनके लिये तो इस प्रकार के झंझट झेलना रोज की बात थी। भगवान् के दर्शन को गये। प्रभु ने पूछा-''कैसे हो'' अरे ठाकुर! कितनी बड़ी कृपा, ऐसी बढ़िया पत्नी दी है; जिसके कारण संसार में मेरा एक दिन भी मन नहीं लगा। उसका स्वभाव अच्छा होता, तो मैं संसार में फँस जाता। बढ़िया किया ठाकुर आपने, ऐसी पत्नी दे दी। उसी के कारण आपकी शरण में आया!' तुकारामजी महाराज ने कोई शिकायत नहीं की; बिल्कुल नहीं। बढ़िया काम किया।

थोड़ी देर पश्चात् गुजरात से नरसिंह मेहताजी आये, प्रणाम किया। 'केम छो'? बड़ी कृपा ठाकुर। अरे! घर में सब ठीक-ठाक है न; पत्नी-आदि। 'आज ही १३ दिन पूरे हुए। उनका सारा क्रियाकर्म करके फिर आप के दर्शन को आया हूँ, ठाकुर! पत्नी गुजर गई। फिर? फिर क्या, **''भलुं थयुं भांगी जंजाळ। सुखे भजीशुं श्रीगोपाळ।''** 'बढ़िया काम हुआ, ठाकुर! वह थी; तो उसकी ओर कुछ ध्यान भी देना पड़ता था, कुछ कर्त्तव्य भी था; क्योंकि पाणिग्रहण किया था। चली गई। मेरी सारी जिम्मेदारी खत्म हो गई। अब बस, केवल आप और मैं, मैं और आप।' कोई शिकायत? ना, बिल्कुल नहीं। पत्नी अच्छी है। झगड़ालू है, ठीक है। चली गई; कोई बात नहीं। संतों को शिकायत नहीं होती; क्योंकि उनकी दृष्टि में परमार्थ बैठा है। उनको जैसा भी है; संसार पूर्ण ही लगता है। इस संसार को पूर्ण करने के चक्कर में नहीं पड़ना।

संतों ने इस संसार को कुत्ते की पूँछ की उपमा दी है। उसको कितना भी सीधा करने का प्रयास करो, छह महीने तक एक नली में डाल कर रखो। जैसे ही नली निकालोगे, पूँछ वैसी ही टेढ़ी की टेढ़ी रहेगी। समाज को नहीं बदल सकते, संसार को नहीं बदल सकते; पर अपनी समझ को बदलना सम्भव है। दृष्टिकोण को परिवर्तित करना सम्भव है। दृश्य नहीं बदलेगा, दृष्टि बदल सकती है और दृष्टि के बदलते ही दृश्य बदल जायेगा।

''संस्कृत-भक्तमाला'' का विमोचन

*श्री दधिमथी वैदिक गुरुकुल, गोठमांगलोद के भवन निर्माणार्थ सम्पन्न भूमि पूजन कार्यक्रम के अन्तर्गत परम पूज्य आचार्य स्वामी श्री गोविंददेव गिरी जी महाराज के कर कमलों से (श्री नाभाजी कृत भक्तमाल (वि.स. १६६७) का काव्यमय भाषान्तरण करके) आचार्य पं. श्री नथमल जी शास्त्री (छापर) द्वारा विरचित **''संस्कृत-भक्तमाला''** (भागवती हिन्दी टीका सहित) का विमोचन किया गया। इस अवसर पर प.पू. स्वामी जी महाराज ने पं. नथमल जी शास्त्री की इस भक्तिमयी संस्कृत सेवा साधना की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा उन्हें सम्मानित किया।*

शास्त्री जी द्वारा इस अवसर पर उपस्थित गणमान्य महानुभावों को इसकी प्रतियां भेंट की गईं। साथ ही महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान, पुणे द्वारा संचालित वेदविद्यालयों हेतु भी ५१ प्रतियाँ भेंट की गईं।

ज्ञातव्य है कि इस पुस्तक पर भारत के महामहिम राष्ट्रपति महोदय एवं प.पू. महाण्डलेश्वर आचार्य स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि जी महाराज द्वारा भी अपनी प्रसन्नता व्यक्त की गई है।

'मध्य प्रदेश राज्य सांस्कृतिक नवोत्थान की ओर अग्रसर'

- आचार्य स्वामी गोविंददेवगिरि

भोपाल विधानसभा के मानसरोवर सभागार में जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी जयेन्द्र सरस्वती कांची कामकोटि पीठ के सान्निध्य में ''आदि शंकराचार्य प्रकटोत्सव'' का भव्य आयोजन संपन्न हुआ। इस अवसर पर आपने आदि शंकराचार्य के अवदानों का पुण्य स्मरण करते हुए अपने उद्गार व्यक्त किये।

समारोह में मध्य प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि आचार्य शंकर ने भारत की सांस्कृतिक एकता में आने वाली समस्त बाधाएं दूर की तथा चारों दिशाओं में चार पीठों की स्थापना कर देश की सांस्कृतिक अखंडता की नींव को मजबूत किया। अतः आदि शंकराचार्य की जीवनी और सनातन धर्म के उद्धार में उनके योगदान पर आधारित पाठ्यक्रम स्कूल शिक्षा में सम्मिलित किया जायेगा।

साथ ही आपने ''आचार्य शंकर सांस्कृतिक एकता न्यास'' के स्थापना की भी घोषणा की तथा आश्वासन दिया कि ओंकारेश्वर में आदि शंकराचार्य की पवित्र गुफा का भी जीर्णोद्धार होगा।

इस अवसर पर महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान, पुणे के अध्यक्ष विद्यावाचस्पति आचार्य स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज ने अपने बहुमूल्य उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि मध्यप्रदेश के लिये आज ऐतिहासिक दिवस है। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश ने आदि शंकराचार्य को ज्ञान का प्रकाश दिया। भगवान् श्रीकृष्ण की शिक्षा भी इसी भूमि पर सांदीपनि आश्रम में हुई। इसी भूमि से मुख्यमंत्री श्री चौहान को नर्मदा सेवा की प्रेरणा मिली। मुख्यमंत्री श्री चौहान को राज्य के मुखिया के नाते अपनी जिम्मेदारी सफलतापूर्वक निभाने के लिये कई पीढ़ियों तक याद किया जायेगा। मध्यप्रदेश में सांस्कृतिक नवोत्थान हो रहा है। भविष्य में बाहर से भारत आने वाला हर आध्यात्मिक यात्री चारों धामों की यात्रा करने के साथ ही मध्यप्रदेश की भी यात्रा अवश्य करेगा। उन्होंने बताया कि आदि शंकराचार्य ने वेदांत दर्शन के माध्यम से सभी प्रकार के संशयों और भ्रांतियों को दूर कर दिया है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि हर व्यक्ति को वेदांत ज्ञान प्राप्त करने का अधिकार है। आदि शंकराचार्य द्वारा लिखे गये भाष्य दुनिया के अद्भुत काव्य हैं जिनमें जीवन-दर्शन है। युवा पीढ़ी को इस दार्शनिक विरासत से परिचित कराने के लिये हर प्रकार का प्रयत्न किया जाना चाहिए।

प.पू. राष्ट्रसंत आचार्य स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज ''विद्यावाचस्पति'' (डी.लिट्.) की उपाधि से विभूषित

भोपाल के अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय के पहले दीक्षांत समारोह में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, उच्च शिक्षा मंत्री जयभान सिंह पवैया, विधानसभा अध्यक्ष सीतासरण शर्मा और कुलपति मोहनलाल छीपा ने राष्ट्र संत आचार्य स्वामी श्री गोविंददेव गिरि जी महाराज को भारतीय ज्ञान परम्परा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु **''विद्या वाचस्पति'' (डी.लिट.)** की मानद उपाधि से विभूषित किया गया है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज की वेद सम्बन्धी सेवाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि भारतीय ज्ञान, परम्परा और विज्ञान अद्भुत है। जब विश्व के आधुनिक राष्ट्रों में सभ्यता के सूर्य का उदय हुआ था उनके निवासी पत्तों-पेड़ों की छाल से तन ढँकते थे। तब भारत के ऋषि-मुनि वेदों की ऋचाओं की रचना कर रहे थे, नालंदा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालय थे, जहाँ सारी दुनिया के मनीषी अध्ययन के लिये आते थे। आगे उन्होंने हिन्दी के प्रति कुंठित मानसिकता को बदलने की जरूरत बताई। उन्होंने आह्वान किया कि अंग्रेजी का ज्ञान श्रेष्ठता का प्रतीक है, इस मानसिकता को समाप्त किया जाये। हिन्दी में काम करने पर गर्व की अनुभूति हो, ऐसा वातावरण बनायें। मुख्यमंत्री ने कहा कि निज भाषा सब उन्नतियों का मूल है। हिन्दी के उद्भट विद्वान श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नाम पर देश का प्रथम हिन्दी विश्वविद्यालय प्रदेश की धरती पर है। यह गर्व का विषय है।

विद्या वाचस्पति (D.Litt) उपाधि स्वीकार करने पर अपने मनोभावों को व्यक्त करते हुए पूज्य स्वामीजी ने कहा, 'ऐसी कोई उपाधि मुझे प्राप्त हो, या होगी ''ऐसा मैंने कभी सोचा नहीं था। फिर भी मैं इसे अत्यंत विनम्रतापूर्वक स्वीकार करता हूँ। मैं इससे प्रसन्न भी हूँ। क्योंकि देश के प्राचीन ज्ञान-गौरव के संवर्धनार्थ स्थापित इस हिंदी विश्वविद्यालय से प्रदत्त यह प्रथम उपाधि प्राप्त करने का सौभाग्य मुझे मिला है। ज्ञान-विज्ञान की हर शाखा के अध्ययन में यह राष्ट्र प्राचीन काल से सर्वोपरि रहा है।

शेष पृष्ठ २४ पर...

पूज्यवर की धर्मयात्रा - २०१७

– डॉ. प्रकाश सोमण

अनेक वर्षों के अन्तराल के पश्चात् श्रद्धेय पूज्यवर ने इस वर्ष उत्तरी अमेरिका की धर्मयात्रा का आयोजन किया था। वैसे आप १९९६ से ही विदेशों में कथा हेतु भ्रमण करते आए हैं। परंतु गत कई वर्षों में मॉरिशस, सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया, थायलैंड आदि देशों में कार्यक्रमों का आयोजन होनेके कारण आप उत्तरी अमेरिकावासियों हेतु समय दे नहीं पा रहे थे।

इस वर्ष की धर्मयात्रा का केन्द्रबिन्दु था कनाडा के टोरोंटो महानगर के ब्रॅम्पटन उपनगर में पिछले दस वर्षोंसे कार्यरत ज्ञानेश्वर आश्रम में हम सभी के परमगुरु संत श्री ज्ञानेश्वर महाराज की मूर्ति की स्थापना का उत्सव। परंतु उससे पहले हमें जाना था अमेरिका। न्यूयॉर्क के फ्लशिंग उपनगर स्थित हिंदू सेंटर। पूज्यवर ने लगभग १० वर्ष पहले भी यहां श्रीमद् भागवत कथा की थी। इस समय न्यूयॉर्क के सुविख्यात गणितज्ञ डॉ. श्री. रवींद्रजी कुलकर्णीने आग्रहपूर्वक पहले दो दिन श्रीमद्भगवद्गीता के छठे अध्याय के श्लोक ११-१५ एवं उसपर संत श्री ज्ञानेश्वर कृत भाष्य इस संबंध में जिज्ञासा एवं अभ्यास चुनिंदा श्रोतृवर्ग के साथ विवरण एवं संगोष्ठि का आयोजन किया था। तत्पश्चात् श्री रामायण कथा सप्ताह श्री वाल्मीकि रामायण को केंद्रवर्ती मानकर चलता रहा।

इसी समय भोपाल के श्री अटलबिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय द्वारा पूज्यवर को मानद डी.लिट. उपाधि प्रदान किये जाने की उद्घोषणा हुई जिसको स्वीकार करने हेतु पूज्यवर ने भारत प्रस्थान किया। उनकी दो दिनकी अनुपस्थितिमें ब्रॅम्पटन के ज्ञानेश्वर आश्रम में डॉ. प्रकाश सोमण ने संत ज्ञानेश्वर की जीवनी के विषय में श्रोताओं को संबोधित किया। पूज्यवर ने वापसी के पश्चात् ज्ञानेश्वरी भावकथा का निरूपण अपनी भावभीनी शैली में कर श्रोताओंको मंत्रमुग्ध किया। कथा के अंतिम दिन संपन्न संत ज्ञानेश्वर की मूर्ति की स्थापना उस सप्ताह का कलशाध्याय था। दूसरे दिन सभी भक्तों द्वारा पूज्यवर का डी.लिट. उपाधि प्राप्ति हेतु सम्मान किया गया एवं संत ज्ञानेश्वर आश्रम के समर्पित कार्यकर्ता श्री. अरविंदजी लाल का उनके जन्मदिन के उपलक्ष्य में अभिनंदन किया गया।

धर्मयात्रा का अंतिम पडाव था कनाडा के पश्चिम तटपर बसा अतिसुंदर शहर व्हँकूव्हर।

शेष अगले पृष्ठ २४ पर...

पृष्ठ २२ का शेष....

मेकॉलेप्रणीत अंग्रेजी शिक्षा ने भारत के प्राचीन ज्ञान का न केवल उपहास किया अपितु उसका प्रचुर मात्रा में नाश भी किया। महान गांधीवादी लेखक धर्मपाल जी का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा, 'आज भी आधुनिक प्रबंधन शास्त्र, आत्मविकास, मानवीय संबंध शास्त्र तथा नेतृत्व गुण विकास इन विषयों पर लिखी हुई अंग्रेजी पुस्तकों से अधिक मौलिक ज्ञान भारतीय परंपरा में छिपा हुआ है।' गणित, पदार्थ विज्ञान, रसायन शास्त्र आदि वैज्ञानिक विषयों का प्राचीन भारतीय ज्ञान तो सर्वमान्य है ही। अब समय आ गया है, हम प्रयत्नपूर्वक इस प्राचीन भारतीय ज्ञान को गौरव प्राप्त करा दें और उसके आधार से अपनी मातृभूमि को भूतकाल से भी अधिक गौरव प्राप्त करा दें। इस दिशा में इस विश्वविद्यालय के द्वारा हो रहे प्रयास का मैं अभिनंदन करता हूँ। दीक्षांत समारोह में वर्ष २०१५-१६ की परीक्षाओं में सर्वाधिक अंक प्राप्तकर्ता छात्रा को अटल बिहारी वाजपेयी स्वर्ण पदक से पुरस्कृत किया गया तथा विश्वविद्यालय की स्मारिका, पत्रिका और भारतीय ब्रह्माण्ड विज्ञान, भारतीय ज्ञान परम्परा पुस्तकों और वृत्त, चित्र की सी.डी. का भी विमोचन किया गया।

पिछले पृष्ठ के शेष.... **(पूज्यवर की धर्मयात्रा – २०१७)**

पूज्यवर ने १९९६ में जब अपनी पहली विदेश यात्रा की तब उसका प्रारंभ व्हँकूव्हर से ही हुआ था। उल्लेखनीय एवं सुखद संजोग की बात है कि स्वामी विवेकानंदजी की सुविख्यात विदेश यात्रा का प्रारंभ भी व्हँकूव्हर से ही हुआ था।

व्हँकूव्हर आते समय ही पता चला कि पूज्यवर को मध्यप्रदेश शासनने दि. १ मई को भगवान् आदि शंकराचार्य जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित एक विशेष समारोह में निमंत्रित किया है। अत: आपको व्हँकूव्हर की उपनगरी बर्नबी स्थित हिंदु मंदिर में आयोजित श्रीमद् भागवत कथा को मात्र ४ दिनों के लिए सीमित करना पडा; परंतु कथा रस वही रहा जो साप्ताहिक कथा में रहता।

पूज्यवर का आगमन व्हँकूव्हर में पाँच वर्षों के अन्तराल के पश्चात् होने के कारण सभी भाविकों में उत्साह उमड़ पड़ा। उससे एक लाभ यह भी हुआ कि वहाँ के दीर्घ काल से निर्माणाधीन भव्य मंदिर का प्रकल्प अब त्वरित गति से पूर्ण होगा एवं आगामी वर्ष में उसका शुभारंभ भी हो जायेगा।

धर्मश्री के सम्पादक डॉ. प्रकाश सोमण व्हँकूव्हर में प्रवचन करते हुए

श्री संत महात्माजी की स्वर्ण जयन्ती सानन्द सम्पन्न!

संत ज्ञानेश्वर, एकनाथ, नामदेव आदि महान संतों की श्रृंखला में ही परभणी जिले के जिन्तूर नामक कस्बे के श्री संत महात्माजी की समाधि के ५० वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में परम पूज्य आचार्य स्वामी श्री गोविंददेवगिरिजी महाराज की परमाध्यक्षता में दिनांक १५ से २३ फरवरी, २०१७ के मध्य ढालेगांव में स्वर्ण जयन्ती महोत्सव का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर श्री बालासाहेब पुराणिक महाराज के पावन सान्निध्य में श्रीमद्‌भागवत् कथा तथा आचार्य स्वामी श्री गोविंददेवगिरि जी महाराज के पावन सान्निध्य में 'श्रीहनुमान कथा' का भी भव्य आयोजन किया गया। दिनांक १८ फरवरी को श्री संत महात्माजी महाराज के जीवन चरित्र पर आधारित मराठी भाषा में लिखे गए ''संत महात्मा जी चरितामृत'' का विमोचन पूज्य गुरुवर के पावन करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इस ग्रंथ का लेखन डॉ. श्री मधुकर क्षीरसागरजी द्वारा किया गया तथा इसका प्रथम पारायण भी दिनांक २१ से २३ फरवरी की कालावधि में हजारों भक्तों के द्वारा सम्पन्न हुआ। स्व. श्री द्वारकादासजी मूंदड़ा की स्मृति में निःशुल्क नेत्ररोग निदान शिविर एवं ढालेगांव के ज्येष्ठ नागरिकों को सम्मानित किया गया। जिसका ग्रामीण क्षेत्र के अनेक लोगों ने लाभ उठाया। श्री महात्माजी की पुण्यतिथि पर शोभायात्रा, वारकरी कीर्तन एवं भव्य भंडारे का भी आयोजन किया गया।

आयोजन को सफल बनाने में समिति के उपाध्यक्ष श्री हनुमानजी कालानी, कोषाध्यक्ष नितिनजी तोतला, सचिव जयप्रकाश जी बिहाणी, सर्वश्री राजेन्द्रजी मणियार, मनोहरजी तोतला, श्रीराधेश्याम जी चौबे, भागवत जी शिंदे, चंद्रकांत जी केले, विष्णुदास जी भूतड़ा, जुगलकिशोर जी तापड़िया, गोविंद जी अजमेरा, डॉ. द्वारकादास जी लड्डा, अशोक जी सोनी, सीताराम जी मंत्री, विष्णुकुमार जी चेचाणी, राजगोपाल जी मानधने, गोकुलदास जी सोनी आदि समिति के सदस्यों ने अपना कर्त्तव्य बखूबी निभाया।

ज्ञातव्य है कि महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान, पुणे द्वारा संचालित संत श्री महात्मा जी वेदविद्यालय के समस्त अध्यापक, व्यवस्थापक, छात्र एवं सेवकों ने भी इस उत्सव में भरपूर सहयोग दिया।

- डॉ. श्री मधुकर जी क्षीरसागर,
- श्री हनुमान कालानी

सदाचार और उसकी श्रेष्ठता

मानव को सच्चा मानव बनाने में अर्थात् उसमें 'मानवत्व''को मूर्तरूप देने के लिए ''वेद'' ने जो विधान निरूपित कर रखे हैं, उसे ही ''मानवधर्म'' कहते हैं। इसी मानव-धर्म शास्त्रों को ''सदाचार'' कहा गया है। जो सदाचार का पालन करता है, उसे ही वास्तव में मानव कहा जाता है। मानव में सर्वगुण संपन्नता ''सदाचार'' से ही आती है। इसी मानवत्व की स्थापना के लिए भगवान् विष्णु ने ''नर'' रूप धारण किया था। सदाचार का आचरण करके मानवत्त्व की स्थापना की थी। सदाचार के पालन से ही परम कल्याण-रूप परम पद-मोक्ष की प्राप्ति होती है। यदि प्रत्येक व्यक्ति सदाचारी बन जाय; तो कोई भी समस्या नहीं रहेगी। भगवान् सबका कल्याण ही करते हैं; क्योंकि भगवान् को अपने कार्य संचालन में सदाचारियों की ही आवश्यकता पड़ती है। अतः हमें प्रामाणिकता से धर्म शास्त्रानुसार सदाचरण करते हुए भगवान् के कार्य में अपने को अर्पित कर देना चाहिए।

मानव में सर्वगुण संपन्नता ''सदाचार'' से ही आती है। इसी मानवत्व की स्थापना के लिए भगवान् विष्णु ने ''नर'' रूप धारण किया था। सदाचार का आचरण करके मानवतत्त्व की स्थापना की थी।

स्कन्दपुरणान्तर्गत श्रीकाशी-खण्ड के ३५ से ३८ वें अध्याय तक ''सदाचार'' का बृहद् वर्णन किया गया है। इसमें ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास-आश्रम धर्मों का विशद वर्णन किया गया है। एक बार श्रीशैल पर्वत पर कार्तिकेय जी से अगस्त्य ऋषि ने पूछा कि कलियुग में अन्य युगों की भांति तपस्या, योगाभ्यास, दान, व्रत आदि करना दुर्लभ होगा, तो मोक्ष की प्राप्ति कैसे होगी? इसके उत्तर में श्री कार्तिकेयजी ने कहा-बिना सदाचार के मनोरथ की प्राप्ति नहीं होती। ''आचार'' ही परम धर्म, परम तपस्या तथा आयुष्य की वृद्धि करने वाला है और ''आचार'' से ही समस्त पापों का नाश होता है।

ब्रह्मलीन योगीराज श्री देवरहा बाबा के अनुसार-

वास्तविक सदाचार तो प्रभु चिंतन है। प्रभु-चिंतन तथा प्रभु-स्मरण जैसे-जैसे बढ़ता जाता है, मन शांत होता जाता है और अंत में भगवान् कृपा करके भक्त के मन को अपने में स्थिर कर लेते हैं। ऐसी अहेतुकी कृपा करना भगवान् का सहज स्वभाव है।

भगवान् से प्रेम करना सीखो। तभी सदाचार का महत्त्व समझोगे। भगवान् ही सारे जगत के सुहृद हैं। तुम्हारे पास हीरा है, लेकिन हीरे को तुम पहचानते नहीं हो। इसी प्रकार भगवान् तुम्हारे पास है, लेकिन तुम उन्हें जानते नहीं हो। उन्हें जानते ही तुम सदाचार का महत्त्व भी जान जाओगे और सदैव सदाचरण ही करोगे। साधु पुरुष जैसा व्यवहार करते हैं, वह सदाचार का ही स्वरूप समझो। सदाचार से मनुष्य को आयु, लक्ष्मी और कीर्ति तो प्राप्त होती ही है, भगवान् भी उसे प्राप्त होते हैं। सदाचार भागवत धर्म है और शिष्टाचार मानव धर्म है।

सदाचार की श्रेष्ठता और फल

अकेले सदाचार के बल से संपूर्ण संसार पर प्रभुत्व पाया जा सकता है।

सदाचार ही सर्वोत्तम शक्ति है, सर्वोत्तम सम्पत्ति है, सदाचार ही सर्वोत्तम धर्म है और मोक्ष का सर्वोत्तम साधन है। पवित्र विचार, पवित्र वाणी और पवित्र व्यवहार ही सदाचार है।

सदाचारी कौन है?

महात्मा विदुर के अनुसार, जो अपने सुख में प्रसन्न नहीं होता, दूसरे के दुःख के समय हर्ष नहीं मानता तथा दान देकर पश्चाताप नहीं करता, वही सदाचारी कहलाता है।

शेष पृष्ठ ३० पर.....

श्री सुरेश जाधव, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष निर्वाचित

गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष योग एवं युद्धाचार्य श्री सुरेशजी जाधव सर **''भारतीय कलरीपयटु महासंघ''** के 'राष्ट्रीय उपाध्यक्ष' के पद पर चुने गए। केरल के कन्नूर इनडोर स्टेडीयम में संपन्न त्रैवार्षिक सभा में यह निर्णय घोषित किया गया।

ज्ञातव्य है कि कलरीपयटु भगवान् परशुराम व अगस्त मुनि द्वारा रचित एक प्राचीन युद्धकला है। श्री जाधव सर की सुपुत्री भुवनेश्वरी से इसी प्राचीन युद्धकला की 'सीडी' का प्रदर्शन फ्लोरिडा अमरिका के विश्व प्रतियोगिता में करवाया था, जिसमें उसने सुवर्णपदक प्राप्त किया था।

विगत तीस वर्षों से श्री जाधव सर इस प्राचीन कला के प्रशिक्षण विस्तार में सक्रिय रहे और अब केंद्रशासन स्तर से क्रीडा निदेशालय के अंतर्गत इस युद्धकला की खेल स्वरूप रचना करके देश से विश्व स्तर पर प्रसारित करने का प्रयास भारतीय ऐशियन तथा विश्व कलरीपयटु महासंघ द्वारा आरंभित है। उल्लेखनीय है कि 'शौर्यसंस्कार' विभाग के अंतर्गत श्री सर ने **इसी प्राचीन युद्धकला के साथ योग आधारित ''आत्मसुरक्षा तंत्र अभ्यासक्रम''** की रचना की है। प्राचीन कलरीपयटु-(कराटे), यह युद्धकला तथा योगशास्त्र के तंत्रों को एकत्रित करके

''आत्मसुरक्षा - प्रशिक्षण'' युवतिओं को प्रदान किया जाता है. शौर्यसंस्कार के साथ भक्ती व योग संस्कार इस प्रशिक्षण में अनिवार्य है।

।। श्रीहरिः ।।

प.पू. स्वामी श्री गोविंददेव गिरि जी महाराज के

* आगामी कार्यक्रम * ई.स. २०१७

दिनांक	स्थान	कथा	दिनांक	स्थान	कथा
०१.०७ से ०८.०७.१७	स्वर्गाश्रम (उत्तराखंड)	गीता साधना शिबिर	०३.१० से ०५.१०.१७	वृंदावन (उत्तरप्रदेश)	शरत् पौर्णिमा
९ जुलाई, रविवार	स्वर्गाश्रम (उत्तराखंड)	गुरुपौर्णिमा व्यासपूजा	०६.१० से ०८.१०.१७	सोलापुर (महाराष्ट्र)	वाग्यज्ञ-प्रवचन
१०.०७ से २४.०७.१७	स्वर्गाश्रम (उत्तराखंड)	श्री हरिहर भक्ति महोत्सव	०९.१० से १३.१०.१७	बार्शी (महाराष्ट्र)	हनुमान-कथा
१०.०८ से १६.०८.१७	श्री पंढरपुर (महाराष्ट्र)	महाभारत शांतिपर्व कथा	१४.१० से १५.१०.१७	परभणी (महाराष्ट्र)	प्रवचन
२३.०८ से २९.०८.१७	श्री मंत्रालयम् (कर्नाटक)	भागवत कथा	१६.१० से २४.१०.१७	पुणे (महाराष्ट्र)	दीपावली पर्व
०७.०९ से ११.०९.१७	पतंजलि योगपीठ (हरिद्वार)	साधु स्वाध्याय संगम	२६.१० से ०१.११.१७	चंडीगड (पंजाब)	भागवत कथा
१३.०९ से १९.०९.१७	मुंबई (प्रेमपुरी आश्रम)	योगवासिष्ठ कथा	०४.११ से ०६.११.१७	साखरखेर्डा (विदर्भ)	हनुमान कथा
२१.०९ से २९.०९.१७	आलंदी (पुणे-महाराष्ट्र)	नवरात्रि अनुष्ठान	०८.११ से १४.११.१७	रायपुर (छत्तीसगड)	भागवत कथा

विशेष स्थिति में कार्यक्रम में परिवर्तन की संभावना रहती है।

संपर्क:- धर्मश्री, मानसर अपार्टमेंट्स, पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे-४११०१६ ***कार्यालय दूरभाष :-*** (020) 25652589 /25672069

Website : www.dharmashree.org Email : dharmashree123@gmail.com

पानीपत शिविर में ३०० बालक लाभान्वित

संत ज्ञानेश्वर गीता प्रचार समिति पानीपत का तीन दिवसीय बाल संस्कार शिविर दि. २५ से २७ मार्च २०१७ तक **द मिलेनियम स्कूल** में सम्पन्न हुआ। शिविर में ३०० बच्चों ने योग-ध्यान, रचनात्मक कार्यशाला, प्रश्नोत्तरी और विभिन्न प्रतियोगिताओं आदि के माध्यम से संस्कार ग्रहण किए। इस अवसर पर प्रथम दिन पर विधायिका शहर रोहिता रेवड़ी मुख्य अतिथि तथा समाजसेवी पवन गुप्ता विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

प्रथम दिन शिविर में सुबह नौ बजे शहर विधायिका रोहिता रेवड़ी ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इसके बाद समिति के सेवकों ने बच्चों को योग व प्राणायाम का अभ्यास कराया। इस अवसर पर लखनऊ से पधारे स्वामी श्री गंगानंद जी महाराज के बालोपयोगी प्रवचन हुए। संगमनेर के कार्यकर्त्ताओं का कार्य प्रशंसनीय रहा। शिविर के दूसरे दिन उक्त अभ्यास के साथ ही मंगल स्मरण, ध्यान, प्रार्थना, शंका-समाधान, योग, रचनात्मक कार्यशाला, मैदानी खेल एवं विभिन्न प्रतियोगिताएं सम्पन्न हुई। शाम को स्वामी गंगानन्द जी महाराज का उद्बोधन हुआ। उल्लेखनीय है कि शिविर में संगमनेर के दत्ता भांदुर्गे जी, गौरव जी, लखनऊ की रूपल, कविता, अंजली तथा दिल्ली की सविता बहन ने प्रशिक्षण प्रदान किया।

बाल संस्कार शिविर के समापन दिवस पर पानीपत के उपायुक्त श्री चंद्रशेखर खरे ने दीप प्रज्वलन किया और लखनऊ, संगमनेर (महाराष्ट्र) व दिल्ली से आए कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया गया तथा बच्चों को आशीर्वचन देकर प्रोत्साहित किया।

ज्ञातव्य है कि यह बाल संस्कार शिविर राष्ट्रीय संत स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज की प्रेरणा से कई वर्षों से पानीपत में गीता परिवार के माध्यम से चलाया जा रहा है। अब इसमें पानीपत के धार्मिक, समाजिक और शिक्षण संस्थान भी समर्पण भाव से जुड़ते जा रहे हैं ।

- श्रीमती मीनाक्षी गुप्ता

कोटा में शारीरिक शिक्षकों को प्रज्ञासंवर्धन प्रशिक्षण

गीता परिवार कोटा एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग राजस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में स्पोर्ट्स टीचर्स का त्रिदिवसीय प्रज्ञा संवर्धन प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। दिनांक २१ अप्रेल से २३ अप्रेल २०१७ को सम्पन्न इस कार्यक्रम में ४९ उच्च माध्यमिक विद्यालयों के ७० शारीरिक शिक्षकों ने भाग लिया।

ज्ञातव्य है कि उक्त प्रशिक्षण वरिष्ठ योग प्रशिक्षक श्री सुरेश जाधव एवं श्रीमती संगीता दीदी द्वारा दिया गया। प्रशिक्षण की प्रकृति एवं गुणवत्ता से जिला शिक्षा अधिकारी श्री नरेन्द्र गहलोत अत्यन्त प्रभावित हुए। उन्होंने इसका महत्व पहचान कर आगे भविष्य में सम्पूर्ण कोटा डिवीजन के पी.टी.आई. हेतु ''प्रज्ञा संवर्धन एवं आत्म सुरक्षा'' प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु गीता परिवार, कोटा को आवासीय शिविर आयोजन की स्वीकृति प्रदान की। फलस्वरूप उक्त कार्यशाला का आयोजन श्रीमती निर्मला दामोदर मारु के निर्देशन में मंडल प्रमुख सुश्री रितिका, सलोनी एवं मार्गदर्शक श्रीमती नीनाजी व संगीताजी ने अपने अन्य साथियों के साथ सफलता पूर्वक पूर्ण किया।

गीता परिवार, हैदराबाद के १७वें शिविर में २१० बच्चे लाभान्वित

गीता परिवार, हैदराबाद एवं श्री स्वामीनारायण गुरुकुल द्वारा आयोजित १७वाँ बाल संस्कार शिविर-निखार विभिन्न कार्यक्रमों के बीच सम्पन्न हुआ।

मोइनाबाद स्थित श्री स्वामीनारायण गुरुकुल प्रांगण में आयोजित शिविर के मुख्य अतिथि उद्योगपति सुरेश सिंघल ने गीता परिवार द्वारा शिविर के माध्यम से दिये जा रहे भारतीय संस्कृति और मूल्यों के संस्कारों की प्रशंसा करते हुए कहा कि भारतीय हिन्दू संस्कृति का धीरे-धीरे ह्रास हो रहा है, जिसे जीवित रखने में गीता परिवार प्रयासरत हैं, जो अत्यन्त प्रशंसनीय है।

गीता परिवारके राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री हरिनारायण व्यास ने कहा कि प.पू. स्वामी गोविंददेव गिरिजी महाराज की प्रेरणा से गीता परिवार ने संस्कारों के कई आयाम स्थापित किये। गीता परिवार ने अपनी सफलता के ३० वर्ष पूर्ण किये हैं। प्रति वर्ष ३ लाख बच्चे संस्कार के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं। उत्तरप्रदेश में राज्य के पाठ्यक्रम में भी संस्कार को लागू किया गया है।

हैदराबाद शाखा द्वारा गत १७ वर्षों से ''शिविर'' लगाया जा रहा है। इस बार शिविर ३० अप्रैल से ६ मई तक आयोजित किया गया। संतोष का विषय है कि संस्कार शिविर में आने वाले बच्चे ही संस्कारित होकर अब शिविर का सफलतापूर्वक संचालन कर रहे हैं। निजामाबाद में गोपीकिशन छापरवाल के सहयोग से गीता परिवार की स्थापना की गयी है, जहाँ से ३५ बच्चे शिविर में भाग लेने आये। उन्होंने बताया कि सात दिवसीय शिविर में विभिन्न जिलों से २१० से अधिक बच्चों ने भाग लिया। हैदराबाद सहित निजामाबाद, करीमनगर, मंचीरियाल, बोधन, भैंसा आदि जिले से बच्चे शिविर में लाभान्वित हुए।

शिविर में प्रतिदिन बच्चों को सुबह ५.३० से योग करवाया गया, प्रबोधन, रचनात्मक कार्य, नैतिक मूल्य पर कहानी, थिएटर कार्यशाला, खेलकूद प्रतियोगिता, रंगमंच (रामायण पर आधारित नाटक) आदि गतिविधियों में बच्चे भाग लेते हैं। बच्चों को खाना खाते समय मौन रहना सिखाया जाता है।

गीता परिवार के राष्ट्रीय विस्तारक व शिविर संरक्षक अरुण गौड़ ने कहा कि देश में तीस वर्षों से और हैदराबाद व तेलंगाना में १७ वर्षों से शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

कार्यक्रम में सभी का स्वागत गीता परिवार, हैदराबाद के अध्यक्ष अजय सौंथलिया ने किया। इस अवसर पर स्वामीनारायण गुरुकुल के देवप्रसाद स्वामी जी भी उपस्थित थे। शिविर संयोजिका राधिका सोनी व श्री भांगड़िया ने बताया कि शिविरार्थियों को लाठी, लांछा, फोटोग्राफ, भगवद् गीता, कराटे, झांझ, न्यूरोबिक्स, सूर्य नमस्कार आदि का प्रशिक्षण दिया गया।

इस अवसर पर गीता परिवार से स्व. गोपीकिशन भांगड़िया की स्मृति में दिया जाने वाला स्वर्ण पदक प्रदान किया गया। इस बार यह पुरस्कार साबू (निजामाबाद) को गोपीकिशन भांगड़िया की धर्मपत्नी ने प्रदान किया। शिविर में उल्लेखनीय कार्यों के लिए रमेश असावा को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन आदि अभय भांगड़िया, कीर्ति व्यास ने किया। पूजा असावा का आभार व्यक्त किया। शिविर अध्यक्ष प्रभा शर्मा, रमेश लोया, महेश गर्ग, अकुण भांगड़िया, प्रियंका, सिमरन, नेहा, दीक्षिता, सुरभि, आंचल, अमोघ, शिवांक, योगेश, हृदय व अन्य द्वारा सहायोग प्रदान किया गया।

गीता परिवार, उत्तर प्रदेश द्वारा होलीकोत्सव सम्पन्न

''होली के रंग नन्हें-मुन्नों के संग''

गीता परिवार उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी मुख्य रूप से शास्त्रीनगर केन्द्र, महाकाल मंदिर केन्द्र, चित्ताखेड़ा केन्द्र आदर्श विहार केन्द्र पर ''होलिकोत्सव २०१७'' (फूलों की होली) का आयोजन किया गया।

इन आयोजनों में शास्त्री नगर केन्द्र पर मुख्य अतिथि ''पूज्य संत देव्या गिरि जी'', विधायक श्री बृजेश पाठक जी एवं लखनऊ महानगर के अनेकानेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। सैंकड़ों की संख्या में उपस्थित दर्शकों ने बाल संस्कार केन्द्र के बालक-बालिकाओं द्वारा मनमोहक श्रीकृष्णलीला के दर्शन एवं फूलों की होली का आनंद लिया।

इसी क्रम में महाकाल मंदिर, राजेन्द्र नगर, चित्ताखेड़ा केन्द्र ऐशबाग, आदर्श विहार केन्द्र बुद्धेश्वर में बाल संस्कार केन्द्र में बालक-बालिकाओं ने फूलों की होली ''होलिकोत्सव २०१७'' का आयोजन हुआ, जिसमें राधाकृष्णजी की लीलाएँ एवं फूलों की होली के अद्भुत दृश्य, भक्त प्रहलाद कथा, होली प्रश्नोत्तरी, होली संदेश, होली प्रतियोगिता, मुकुट प्रतियोगिता तथा अन्य विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

गीता परिवार, जयसिंगपुर

प्रतिवर्ष गीता परिवार जयसिंगपुर द्वारा अन्तरराष्ट्रीय सूर्यनमस्कार के दिन सामूहिक सूर्यनमस्कार, प्रज्ञा संवर्धन इत्यादि उपक्रम लिये जाते हैं। जिसमें कभी २००० तो कभी २५०० बच्चे सहभागी होते हैं। पूरे महीने भर विद्यार्थियों की प्रेक्टिस होती है।

इस वर्ष गीता परिवार को ३० साल हुए। इसलिए ३९०० विद्यार्थी इस सामूहिक उपक्रम में लक्ष्मीनारायण मालू हाई स्कूल मैदान पर सहभागी हुए। इन सभी विद्यार्थियों ने ३० संगीतमय योग सोपान के १९ आसन प्रस्तुत किए। इसी के अंतर्गत नित्य संस्कार वर्ग तथा 'दत्तक पालक योजना' के छोटे बालकों ने प.पूज्य गुरुदेव की अत्यंत सुन्दर रचना 'गीता परिवार हमारा' पर नृत्य प्रस्तुत किया। ५ स्पर्धायें गीता परिवार द्वारा ली गयी थी, जिसका पारितोषिक वितरण विद्यालयों को किया गया। जिन विद्यालयों के बालक त्रिदशक पूर्ति संगमनेर में सहभागी हुए उन वद्यालयों को संगमनेर से आई हुई ट्रॉफी भी प्रदान की गई।

पृष्ठ २६ का शेष **(सदाचार और उसकी श्रेष्ठता)..**

सदाचार की रक्षा सदा करनी चाहिए

श्रेष्ठ पुरुष, पापाचारी (दूसरों का अहित करने वाले) प्राणियों के पाप कर्मों का प्रतिसरण नहीं करते अर्थात् बदले में उनके साथ वैसा बर्ताव नहीं करते। वे उत्तम सदाचार से विभूषित होते हैं। सदाचार ही सत्पुरुषों का भूषण है, अतः ऐसे उत्तम सदाचार की सदा रक्षा करनी चाहिए।

सदाचारी व्यक्ति में निम्नलिखित गुणों का होना आवश्यक है।

❋ वाणी की शालीनता। ❋ सद्व्यवहार
❋ दोहरी जिन्दगी न जियें।
❋ अहंकार का त्याग करें।
❋ सबको सम्मान दें।
❋ चरित्र एवं व्यवहार में समन्वय हो।
❋ पराई वस्तु की अपेक्षा न करना।
❋ आहार में पवित्रता रखना।
❋ स्वाध्याय एवं सत्संग करना।
❋ धैर्य एवं धर्म को अपनाना।
❋ बुद्धि एवं विवेक से काम करना।
❋ सत्य भाषण करना तथा इन्द्रियों पर नियंत्रण रखना।

- कृष्णचन्द्र टवाणी,
प्रधान संपादक - ''अध्यात्म अमृत''

गीता परिवार, जालना : कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न!

गीता परिवार जालना द्वारा कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में जालना, औरंगाबाद, परतुर, मंढा, अम्बड़, नेर, मानवत आदि शहरों के २०० कार्यकर्ता उपस्थित थे। प्रशिक्षण देने हेतु गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. संजय जी मालपाणी, डॉ. राजकुमाड्जी लड्डा, पं. अशोक भैया एवं श्री गिरीश जी डागा पधारे। शहर की नगराध्यक्षा सौ. संगीता गौरयंटल के साथ शहर के गणमान्य लोगों के सान्निध्य में इस शिविर का आरंभ हुआ। आ. संजु भैया ने 'संस्कार वर्ग प्रभावी कैसे बनाये' इस विषय पर बात की तथा अशोक भैया ने गीता परिवार की 'पंचसूत्री' पर बात की तथा गिरीश भैया ने बाल संस्कार वर्ग संचालन हेतु विविध विषयों पर चर्चा की। इस शिविर को सम्पन्न बनाने में गीता परिवार जालना की जिला अध्यक्षा सौभाग्यवती अनिता राठी, विजय कुलकर्णी, सौ. निर्मला साबू, मीना बजाज, राजश्री भक्कड़, सविता लोया, श्रद्धा दागडिया, लता धूत, प्रफ्फुलता राठी आदि कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग रहा। इस शिविर के ही परिणाम स्वरूप इस बार ग्रीष्मकालीन अवकाश में गीता परिवार जालना की ओर से १५ केंद्रों का संचालन हुआ जिससे लगभग २००० बालकों ने संस्कारों की गंगा में गोता लगाया।

लखनऊ में संस्कार संयोजन शिविर सम्पन्न

गीता परिवार लखनऊ के तत्त्वाधान में विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी ''संस्कार संयोजन व्यक्तित्व विकास एवं स्वाध्याय'' विषय पर प्रादेशिक कार्यकर्ता शिविर का आयोजन १४ मई २०१७ को प्रातः १० बजे से सायं ४ बजे तक कल्याणकारी आश्रम के दुर्गाजी मन्दिर, शास्त्री नगर में किया गया। इसमें १५० कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। शिविर में उन्हें गीत व स्तोत्र गायन, अति प्रभावशाली लोगों की ७ आदतें, Proactive, Begin with end in mind, Sharpen your saw तथा गीता परिवार की परिकल्पना, ग्रीष्मकालीन संस्कार शिविर हेतु उनके नियोजन के लिये एक विशेष सत्र किया गया। इसके साथ ही नये कार्यकर्ताओं हेतु एक नवीन वर्ग भी लिया गया। इस वर्ष भी विगत वर्ष की तरह ग्रीष्मकालीन अवकाश में १११ संस्कार पथ शिविर आयोजित करने का संकल्प लिया गया।

राष्ट्रीय-योग महोत्सव : एक स्मृति !

- सौ. उषा वैद्य, गीता परिवार आर्वी

राष्ट्रीय योग महोत्सव में भाग लेने हेतु दिनांक ९ दिसंबर २०१६ को गीता परिवार की जन्मस्थली संगमनेर में कदम रखते ही भारतीय संस्कृति का सजीव रूप देखकर मन दिव्य आनन्द अनुभव कर रहा था। दीर्घ प्रवास की थकान को आत्मीय स्नेहिल आतिथ्य ने क्षणभर में छूमंतर कर दिया। शीतकाल में थकान मिटाने के लिये गरम पानी, गरमागरम स्वादिष्ट भोजन एवं मालपाणी लॉन्स में जलाया गया अलाव, शयनपूर्व गरमागरम केशर गौदुग्ध सभी कुछ तो आतिथ्य की परकाष्ठा को छूकर संगमनेर की व्यवस्था एवं आत्मीयता को पाकर भारत के हर प्रांत से आए गीता परिवार के सदस्य कह उठे धन्य है हमारे प्रेरणास्पद गुरुदेव, धन्य हैं हमारे राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष संजय भैय्या, धन्य है हमारी प्यारी अनुराधा भाभी, हमारे दत्ता भैय्या एवं संगमनेर के सभी समर्पित कार्यकर्ता सभी धन्य हैं बारंबार अभिनंदन! अभिनंदन! अभिनंदन!

तत्पश्चात् गीता परिवार शाखाओं द्वारा प्रस्तुत मनोरंजन कार्यक्रम में भगवद्‌भक्ति, देशभक्ति एवं भारत के विभिन्न राज्यों की संस्कृति का परिचय, शौर्य संस्कारों का प्रदर्शन, माँ भारती के प्रति हमारे स्नेह को उजागर कर रहा था। दूर-दूर से आए गीता परिवार शाखाओं के प्रमुखों के कार्यनिवेदन अपनी कार्यक्षमता का परिचय दे रहे थे।

दूसरे दिन गीता जयंती का मुख्य समारोह था। प्रात: काल योग सोपान अभ्यास के बाद नित्य कर्म एवं अल्पाहार से निवृत्त हो कर सभी लोग शोभा यात्रा के लिये तैयार हो गए। शोभा यात्रा शुरु हुई। सामने सुदंर रंगोली, भारतीयता का परचम लहराते केशरिया ध्वज सुदंर सजीव सजीली बाल गोपालों की झांकियां, गगन भेदी ढोल नगाडे ताशे, गीता गान करते शोभा यात्रा की घोषणाएँ देते बालक, पूज्य गुरुदेव द्वारा पुष्प वृष्टि आदि सभी कुछ नयनभिराम था कि भुलाऐं नहीं भूलता। हर पल एक ही बात मन में आती रही कि हम बड़े भाग्यवान हैं, जो उस पल के साक्षी हैं, जो पल देवताओं को भी दुर्लभ है धन्य हमारा गीता परिवार........

दोपहर भोजनादि से निवृत्त हो कर सभी लोगों ने अपने मुख्य कार्यक्रम स्थल जाणता राज मैदान की ओर कूच किया। अपने ही परिवारजनों का उत्साहवर्धन पूज्य गुरुदेव के हस्तकमलों हुआ। से सभी गीता-परिवार शाखाओं का सत्कार भी हमारे राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष संजय भैय्या की कार्यशैली में सभी का साथ सभी का विकास इस भाव का परिचायक है। तत्पश्चात् सबसे महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम अन्तर्राष्ट्रीय योग गुरु स्वामी रामदेव बाबा की प्रमुख उपस्थिति में साढ़े बारह हजार विद्यार्थियों द्वारा संगीतमय योगासन प्रात्यक्षिकी रही। योगगुरु स्वामी रामदेव बाबा का आगमन और पूज्य गुरुदेव का मिलन का अनुपम दृष्य देखते ही बनता था। बाबा का स्वागत जरी के केशरी सुंदर दुपट्टे, लाल गुलाब निर्मित हार एवं गीता परिवार के आदर्श विवेकानंद एवं महाराष्ट्र के गौरव श्री शिवाजी महाराज की प्रतिमा देकर किया गया। गीता परिवार का प्रस्ताविक भी परम पूजनीय स्वामी गोविंददेव गिरि जी द्वारा रचित ''गीता परिवार हमारा'' नृत्य द्वारा किया गया।

स्वामी रामदेवजी का स्वागत गीत भी संतों के लायक समयानुकूल ही था। जाधव परिवार द्वारा शौर्य संस्कार का प्रदर्शन इस बात का परिचायक था कि हम संस्कारी, योगी भक्त ही नहीं वीरता के भी पुजारी हैं। तत्पश्चात तिरंगे परिधान से आच्छादित हमारे साढ़े बारह हजार विद्यार्थियों द्वारा संगीतमय योग प्रात्यक्षिकी को देखकर ऐसा लगता था मानों संगीत की धुन के साथ तिरंगा लहरा रहा हो। ऐसे विहंगम दृष्य ने सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। रात्रि में ध्रुव अकादमी के ३५० विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत महानाट्य 'योगेश्वर' को देखकर उसकी सजीवता, सुंदर मनोहारी वेशभूषा, मंच सज्जा को देखकर लोग भाव विभोर हो गये।

गीता परिवार द्वारा गीता जयंती पर आयोजित त्रिदशक समारोह की भव्यता, अनुशासन, व्यवस्था, दूरदर्शिता एवं आत्मीयता को देखकर मन बार बार कहता था।

'न भूतो न भविष्यति'।

गीता परिवार, कलबुर्गी शिविर

गीता परिवार की कलबुर्गी शाखा द्वारा गत तीन वर्षों से गर्मी के छुट्टियों में स्पोर्टस् एण्ड आर्ट का शिविर लगाया जाता है। इसमें जो विषय बच्चों को वर्ष भर सीखने को नहीं मिलते उनका प्रशिक्षण देने का प्रयास रहता है। राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष संजय भैय्या से संगमनेर में मिलने पर यह संकल्पना हमें प्राप्त हुई।

इस वर्ष दो से नौ अप्रैल तक अर्धदिवसीय शिविर लगाया गया। पहले दिन गौशाला व धातू के उपकरणों की कंपनी में बच्चों को ले जाया गया। इससे बच्चों का स्वाभाविक कौतुहल बढ़ा तथा गौमाता के प्रति स्नेह बढ़कर उनका महत्त्व बच्चों ने जाना।

शिविर में प्रातः छ: से दोपहर बारह बजे तक प्राणसंस्कार - न्यूरोबिक्स, शौर्यसंस्कार - सेल्फडिफेन्स, नृत्यसंस्कार - भरतनाट्यम् आदि विषयों के साथ ही वाणीसंस्कार - विविध श्लोक अध्याय पठन, मनःसंस्कार - गीतगायन कथाकथन व प्रात्यक्षिक प्रयोग आदि विषय भी सिखाए गए! राम जन्मोत्सव के दिन रामनाम जप व हनुमान चालीसा का पठन किया गया।

अंतिम दिवस समापन में सीखे हुए हुनर का प्रात्यक्षिक बच्चों ने कुशलता से किया। इस प्रदर्शन से बच्चे, अभिभावक और आमंत्रित लोग बहुत ही आनंदित हुए।

हम इस प्रकार का सुन्दर प्रदर्शन कर पाये; क्योंकि गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष योग एवं युद्धाचार्य श्री सुरेश जाधव सरजी ने पहले दो दिन स्वयं उपस्थित रहकर कुशलता से बच्चों को योग व सुरक्षातंत्रों का प्रशिक्षण दिया। महेंद्र भैय्या व अरविंद भैय्या ने आगे का प्रशिक्षण तथा अनुशासन सँभाला। नाट्यकेशी अकेडमी के नृत्यगुरु श्री हृषिकेश पागे सरजी ने नृत्यसंस्कार के अंतर्गत बच्चों से श्रीकृष्णवंदना प्रस्तुत करवाई। कम समय में अच्छे से अच्छा प्रात्यक्षिक प्रशिक्षण कैसे लिया जा सकता है इसका यह एक सुंदर उदाहरण हमारे लिए था! इस आयोजन में सारिका बजाज, श्वेता मालू, संतोष सोमाणी, आरती मालू, नयना सेठीया, ममता गोयल, रेखा तोष्णीवाल, मधू डागा, मंगल राठी, श्रुति बजाज, शिल्या गिल्डा, कोमल बियाणी आदि ने पूर्ण रुप से सेवा कार्य किया जो प्रशंसनीय है।

गीता परिवार संस्कार वाटिका - २०१७

गीता परिवार द्वारा ग्रीष्मकालीन अवकाश में १० से १५ दिनों तक बाल संस्कार वर्गों का भव्य आयोजन किया जाता है। इन वर्गों के माध्यम से हजारों की संख्या में बालक एवं कार्यकर्ता संस्कारों की गंगा में गोता लगाते हैं। प्रस्तुत है वर्ष २०१७ के अप्रैल व मई माह में सम्पूर्ण भारतवर्ष के कौने-कौने में आयोजित बाल संस्कार वर्गों का विस्तृत वर्णन। बाल संस्कार वर्ग को सफलता पूर्वक सम्पन्न करवाने वाले देशभर के समस्त कार्यकर्त्ताओं का अभिनंदन एवं पूज्य गुरुदेव का मंगल आशीर्वाद। आशा है हम सब मिलकर सम्पूर्ण विश्व में गीता परिवार की पताका पहराएंगे और पूज्यवर के स्वप्नों को साकार करेंगे।

(संगमनेर शाखांतर्गत केन्द्र)

सम्पन्न विशेष उपक्रम :- इन वर्गों में वेशभूषा स्पर्धा, पत्रलेखन, बेटी बचाओ, निबंध लेखन, जल बचाओ, जादू के प्रयोग, स्वच्छता अभियान, हैन्डीक्राफ्ट, योगासन, सामान्यज्ञान, सूर्यनमस्कार, हनुमान चालीसा कंठस्थीकरण, रंगोली आदि के प्रशिक्षण सम्पन्न हुए।

अ.नं.	विभाग	केन्द्र प्रमुख एवं कार्यकर्त्ता	विद्यार्थी संख्या
१	मालपाणी विद्यालय अकोले नाका, संगमनेर	**सौ.राजश्री मणियार** – सौ.संध्या ढोले, श्री श्रीपाद विन्नू, श्री संदीप लाहोटी, श्री कल्पेश मर्दा, श्री हर्षल काले, दिव्या राठी, शितल निसाल, प्रियंका घोडेकर	९०
२	संस्कार बालभवन विद्यानगर, संगमनेर	**उत्कर्षा बूब**– श्रीमती पुष्पा चांडक, श्री अमित चांडक, श्रीनिलेश पठाडे, श्री अनिकेत बेल्हेकर, कु. वैष्णवी धाडीवाल, कु. सुचेता कुलकर्णी, कु. साक्षी यादव	८०
३	गणेश मंदिर, गणेशनगर संगमनेर	**सौ. पुजा दीक्षित** – सौ. शकुंतला दायमा, सौ. नंदा बाहेती, सौ. रूक्मिणी लड्डा, सौ. अरूणा पंवार, श्रीमती मालती गोर्डे, सौ. हेमलता भोर, श्रीमती प्रतिमा देशपांडे, श्री निरज दिक्षीत, श्री हेमंत पोटे	१००
४	काशेश्वर विद्यालय	**श्री हिरामण जाधव** – श्री रोहिदास गवांदे, श्री धनंजय ढोले, श्रीमती मंगल गोडगे,	१००
	कासारा दुमाला, संगमनेर	श्री नानासाहेब भास्कर, श्री ज्ञानेश्वर वाले	
५	जनता विद्यालय बडगांवपान	**प्राचार्य वी.के. शिंदे** – श्रीमती एस.एल. मोरे, श्री अडांगले सर	३००
६	अमृतेश्वर मंदिर अमृतनगर	**सौ. प्रणिता बेल्हेकर** – सौ. अर्चना देशमुख, कु. प्रतिक्षा दुसाने, कु. प्रियंका गोडगे, कु.स्वाती दिघे, कु. कल्याणी बेल्हेकर, श्री.जे.आर. तांबोली, श्रीमती शोभा मोरे	५०
७	श्रमशक्ति विद्यालय मालदाड	**श्री अजय महाले** – श्री दत्तु कौटे, श्रीमती मनिषा तुपे, मोहनदास बैरागी, राजेन्द्र पंवार	१७५
८	थोरात विद्यालय पानोडी	**श्री कैलाश जाधव** – कु. प्राची पावल, कु. पल्लवी पावल, कु. पुजा थोरात, श्री दत्ता बडें,. श्री सातपुते सर	८०
९	ज्ञानगंगा विद्या निकेतन मांचीहिल	**श्री पंडीतराव डेंगले** – श्री टी.एन.बो.हाडे, श्री प्रदीप जगताप	५०
१०	जिला परिषद शाला सात्रल, पाथरे	**श्रीमती फरिदा शेख** – सौ. योगिता वाकचौरे, कु. रेश्मा मणियार, सौ. नासिम शेख, सौ. छाया पेटारे	५०

अ. नं.	विभाग	केन्द्र प्रमुख एवं कार्यकर्त्ता	विद्यार्थी संख्या
११	आर्दश विद्यालय गुंजलवाडी पठार	**श्री सीताराम –** श्री सतीश बो-हाडे, श्रीमती मंदा लांडगे, श्री कैलाश नेहे, श्री एस. आर. जाधव, श्री यु.आर. पाडेकर	१००
१२	कन्या विद्यालय अकोले	**सौ. प्रभावती महाले –** श्री शरद वामन, कु.ताई वालझाडे, सौ. किर्ती बाहेती, कु. श्रेया कोलपकर, कु. अंकिता मणियार, कु. प्रेक्षा मेहता	४०
१३	ज्ञानवर्धिनी शाला अकोले	**सौ. प्रतिमा सूर्यवंशी –** कु. वैष्णवी मैड, कु. समृद्धि कोलपकर, कु. साक्षी वाणाईत, सौ. श्रीदेवी रासने, श्री गणेश जोशी	१००
१४	अगस्ती विद्यालय अकोले	**कु. श्रुति राठी –** सौ. स्मिता मुंदडा, कु. दिपीका, येलमामे, कु. प्रतिमा नाईकवाडी कु. अस्मिता विसाल, श्री संजय पवार, श्री हरिश आंबरे	१००
१५	प्रवर विद्यालय, इंदोरी, अकोले	**श्री नारायण कानवडे –** श्री अजिंक्य हासे, श्री विजय शेलार, श्री रोहन आबारी श्री भाऊसाहेब निलकंठ, कु. मथुरा सोनवणे	–
१६	जिल्हा परिषद शाला अंबड, अकोले	**श्रीमती स्वाति –** श्री कैलास कोते, श्रीमती जे.एस. गायकवाड, श्रीमती पी.एल. साबले	१००
१७	जिल्हा परिषद शाला, कासारा दुमाला, संगमनेर	**श्री बालासाहेब –** सौ. मेघा आरोटे, श्री शशांक पाटील, श्री शुभम आरोटे, श्री आदेश आरोटे, कु. कविता रोकडे, श्री प्रतीक भांडगे	१५०
१८	अंबिका शक्तिपीठ, टाहाकरी	**श्री केरू महाराज केदार –** श्री गौतम महाराज एखंडे, श्री रामहरी एखंडे, श्री महेश एखंडे, श्री ऋषिकेश एखंडे, श्री मुकुंद एखंडे, श्री प्रशांत एखंडे	४०
१९	श्रीसमर्थ माध्य. विद्यालय मवेशी, अकोले	**श्री विनायक सालवे –** श्री विलास महाले, मच्छिंद्र देशमुख, श्री दगडू टकले, श्रीमती शोभा आव्हाड	७०
२०	जिला परिषद शाला वासेरे, अकोले	**श्री राम वाकचौरे –** सौ. उर्मिला भालेराव, सौ. सविता वाकचौरे, श्रीमती सलिफा एखंडे	–
२१	लक्ष्मीनारायण मंदिर, येवला	**सौ. सोनाली कलंत्री –** सौ. सोनल राठी, सौ. सुचिता काबरा, सौ. वंदना मूंदडा, सौ अर्चना मूंदडा, सौ. मिनल काबरा, सौ. अनुराधा मारशा	१८०
२२	बालाजी मंदिर, कोपरगांव	**सौ. विमल राठी –** श्रीमती सरिता लाहोटी, सौ. निर्मला मालपुरे, श्री आशुतोष शिवाल	१००
२३	न्यू इंग्लिश स्कूल खंडाला	**सौ. सुचिता भट्टड –** सौ. गिता रासकर, श्री विजय चव्हाण	१००
२४	बालाजी मंदिर, श्रीरामपुर	**सौ. संगिता जाजू –** सौ. सपन करवा, सौ. उषा मूंदड़ा, सौ. सुचिता भट्टड, सौ. रमा पोफले, सौ. गिता बंग, सौ. कविला भुंदडा	१००
२५	भारदे हायस्कूल, शेवगांव	**सौ. भारती बाहेती –** श्री संजय, बोरूडे, श्री अशोक इंगले, सौ. सिमा बोरूडे कु. सुप्रिया हरके, श्री ओमप्रकाश देशमाने, शश्री ऋषी गवली	२००
२६	बालभवन, सिन्नर	**सौ. मीना परदेशी –** सौ. सुरेखा मुत्रक, कु. पुनम जगताप, कु. रिया बाकले, कु. सिनीन काझी	५०
		कुलयोग –	**२५०५**

संस्कार वाटिका - २०१७ (सोलापुर शाखांतर्गत केन्द्र)

निम्न केन्द्रों का संयोजन गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष योग व युद्धाचार्य श्री. सुरेश जी जाधव तथा कार्यविस्तारिका संगीता दीदी जाधव एवं ओम भैय्या, दरक के निर्देशन में संपन्न हुये। वाटिका में बालकों को प्रज्ञा संवर्धन, शौर्य संस्कार, संस्कृति संवर्धन, रंग भरो स्पर्धा एवं हेमा फाउंडेशन की नैतिक मूल्य शिक्षा के लघुपट प्रदर्शन के माध्यम से सदगुणों का महत्त्व समझाया गया।

अ. नं.	विभाग	केन्द्र प्रमुख एवं कार्यकर्त्ता	विद्यार्थी संख्या
१.	दमाणी विद्यामंदिर, सोलापुर	**सौ. स्मिता लाहोटी–** सौ. शीतल मुंदडा, सौ. अरुणा लाहोटी, श्री. मोरे सर, सौ. शैलजा बंडगर, भोसलेताई	२१०
२.	महेश इंग्लिश मिडियम स्कूल, सोलापुर	**सौ. संगीता दरगड –** सौ. पद्मा सोमाणी, सौ. वृषाली जाधव, श्री. शिंदे सर, मळेकर ताई	३०
३.	महेश भवन, सोलापुर	**सौ. सरला झंवर –** सौ. लीला भंडारी, सौ. पुष्पा भंडारी, सौ. प्रीति राठी, राधिका दीदी, सौ. नंदा दरगड, सौ. लता कालाणी, सौ. सुप्रिया सोमाणी	१००
४.	सोनामाता प्रशाला, सोलापुर	**सौ. मोहिनी, राठी –** सौ. सुषेणा बच्चुवार, प्रज्ञाताई, सौ. सुखदा करवा	६५
५.	शिवस्मारक, सोलापुर	**वृषालीताई –** भुवनेश्वरीदीदि, महेंद्रदादा, मिहिरदादा	१००
६.	हॅपी डेज स्कूल, सोलापुर	**सौ. विद्या मणुरे –** महेश नक्का, सौ. अर्चना तांदळे	१५०
७.	खंडोबा मंदिर, बाळे	**श्री. संजय साबळे –** भाग्यश्री साबळे	७५
८.	देवी मंदिर, दमाणीनगर	**श्री. शिवशरण वाणीपरीटी –** सुनिताताई, मिनाक्षीताई	९०
९.	गणेश मंदिर, काडादीनगर	**माणिकताई धोत्रीकर –** बोरकर ताई	४०
१०.	गुरु नानक कॉलनी, सोलापुर	**नीलिमाताई –** शुभाताई, प्रतिभाताई	७०
११.	आसरा कॉलनी, सोलापुर	**अनुताई व्हनमाने –** मिहिर भैय्या	५०
१२.	कल्याण नगर वस्ती, सोलापुर	**मनिषाताई पाटील –** घोडके ताई, विशालदादा	१००
१३.	भगवती हॉल, सोलापुर	**संगीता दरगड –** सुरभि राठी	४०
१४.	मंगल बेड़ा, तहसील	**गीता ताई मिड्ढा –** माया ताई मिड्ढा	१२५
१५.	मोहोल, तहसील (प्रथम वर्ग)	**दशरथ काले –** प्रकाश आठवले	११०
१६.	मोहोल, तहसील (द्वितीय वर्ग)	**दशरथ काले –** प्रकाश आठवल	११०
१७.	आय. ए. एस. स्कुल,	**मीहिर जाधव** - महेंद्र स्मिता, पकाले मॅडम,	२२५
१८.	एम. पी. एस. स्कुल	**मीहिर जाधव–** व्यंकटेश	४५
१९.	एन. के. ऑर्कीड स्कुल	**दशरथ –** जगताप मॅडम	५५
२०.	के. एल. ई. इग्लिश स्कुल	**मनिषा –** सुषमा - पुजारी मॅडम	८५
२१.	स्वामी नारायण गुरुकुल	**मीहिर जाधव** - महेंद्र	५०
२२.	शिवदास मंगल कार्यालय, शेलगी	**प्रभुराज** - प्रसाद भैय्या	८०
		कुलयोग	**२००५**

संस्कार वाटिका - २०१७ (औरंगाबाद शाखांतर्गत केंद्र)

निम्न केंद्रोंका संयोजन गीता परिवार, औरंगाबाद शाखा अध्यक्षा सौ. रमा सतिशजी साबू, सचिव सौ. स्मिता मुंदडा के निर्देशन में संपन्न हुये।

वाटिका में दंतविशेषज्ञ डॉक्टरों द्वारा दंतचिकित्सा एवं दातोंकी सफाई पर मार्गदर्शन किया एवं चित्रकला, निबंध, श्लोक, आदि स्पर्धाये संपन्न हुई।

क्र.	विभाग	केन्द्र प्रमुख एवं सहयोगी कार्यकर्ता	विद्यार्थी संख्या
१.	माउली बाल संस्कार केंद्र, गारखेडा	सौ. सुरेखा लड्डा, सौ. वनिता खंडेलवाल, सौ. विजया खटोड, सौ. अर्चना मंत्री, सौ. रमा साबू	४०
२.	अष्टविनायक बाल संस्कार केंद्र,	सौ. स्मिता मुंदडा, सौ. मंगल मुंदडा, सौ. चंदा मुंदडा बन्सीलालनगर	३५
३.	संस्कार सुगंध बाल संस्कार केंद्र, सिडको	सौ. मंगल राठी, सौ. जान्हवी केळकर, सौ. मधुबाला केला, सौ. मीनल देशपांडे	३५
४.	समर्थ बाल संस्कार केंद्र, सिडको	सौ. अर्चना मुंदडा, सौ. प्रभा मुंदडा, सौ. अनुराधा मुंदडा	४८
५.	कृष्णम स्कूल, देवलाई	सौ. माया साबू, सौ. अराधना मंत्री	६४
६.	दिव्य मराठी आयोजित केंद्र, कलाकट्टा	सौ. विजया खटोड, सौ. माया साबू, सौ. सुरेखा लड्डा, सौ. अर्चना मंत्र	९०
७.	श्रीकृष्ण बाल संस्कार केंद्र, खारापुआ	सौ. पल्लवी बलदवा, सौ. लता असावा, सौ. मनीषा मालानी	४५
८.	जागृती बाल संस्कार केंद्र, प्रतापनगर	सौ. कनक मल, सौ. मंजू जाजू, सौ. निता लोया, सौ. शितल पल्लोड	३५
९.	ज्योती बाल संस्कार केंद्र, ज्योतीनगर	सौ. पद्मा झंवर, सौ. संगीता सिकची, सौ. संगीता तोष्णीवाल, दिपाली बजाज	७०
		कुलयोग	**४६२**

संस्कार वाटिका - २०१७ (पुणे शाखांतर्गत केंद्र)

निम्न केंद्रोंका संयोजन गीता परिवार, पुणे प्रमुख सौ. संतोषी मुंदडा एवं श्री. सत्यनारायणजी मुंदडा के निर्देशन में संपन्न हुये।

क्र.	विभाग	केन्द्र प्रमुख एवं सहयोगी कार्यकर्ता	विद्यार्थी संख्या
१.	समर्थ विद्यालय, बिबेवाडी	**सौ. वेदिका कुलकर्णी** -संतोषी मुंदडा, शंतनू रिठे	३५
२.	महालक्ष्मी मंदिर, सारसबाग	**सौ. संगीता मणियार -** संतोषी मुंदडा, शुभांगी जाजू, तृप्ती खंडेलवाल, मंजू डागा, विद्या मंत्री	८०
३.	बाल संस्कार केंद्र, पाषाण	**सौ. सूर्यकांता मानधने**	८०
४.	बाल संस्कार केंद्र, वडगांवशेरी	**सौ. यशोदा कवा -** जगदीश कर्वा, पूजा कर्वा	३५
५.	गोविंद बाल संस्कार केंद्र, ताडीवाला रोड	सौ. चित्रा बेलुर - विवेक गुरव, प्रतीक भांदुर्गे	३०
६.	बाल संस्कार केंद्र, चिंचवड	**श्री. लक्ष्मण जोशी -** सविता जोशी, अशोक पारीक	४८
७.	बाल संस्कार केंद्र, दीप बंगला चौक	**सौ. संजना शहा**	४०
८.	गुरु गोविंद बाल संस्कार केंद्र, मगरपट्टा	**सौ. विद्या मंत्री**	२०
९.	आपला बालभवन, सिंहगड रोड	**सौ. वृंदा देशपांडे -** संतोषी मुंदडा, निर्मला गांधी	२८
		कुलयोग	**३९६**

संस्कार वाटिका - २०१७ (जालना शाखांतर्गत केंद्र)

निम्न केंद्रोंका संयोजन गीता परिवार, जालना शाखा अध्यक्षा सौ. अनिता राठी एवं अन्य सहयोगी कार्यकार्ताओं के निर्देशन में संपन्न हुये। वाटिका में बच्चोंको बँक के कामकाज की जानकारी दी एवं विविध स्पर्धाये संपन्न हुई।

क्र.	विभाग	केन्द्र प्रमुख एवं सहयोगी कार्यकर्ता	विद्यार्थी संख्या
१.	जिजाउ बाल संस्कार केंद्र	**सौ. मीना बजाज** – सौ. छाया तापडिया, श्री. नारायण बजाज	६०
२.	वीर शिवाजी बाल संस्कार केंद्र	**सौ. राजश्री भक्कड** – सौ. अनिता राठी, सौ. नूतन दहाड, सौ. अनुपमा सोमाणी, सौ. रचना राठी, सौ. नेहा बांगड	६५
३.	स्वामी विवेकानंद बाल संस्कार केंद्र	**सौ. सविता लोया** – सौ. कोकिला तोष्णीवाल, सौ. साधना मालपाणी, सौ. उर्मिला सोनी	५५
४.	वीर सावरकर बाल संस्कार केंद्र	**सौ. श्रद्धा दागडिया**–सौ. सरिता बजाज, सौ. कविता होलानी, सौ. अनुराधा मुंदडा	७०
५.	सावित्रीबाई फुले बाल संस्कार केंद्र	**सौ. लता धूत** – सौ. बिना चरखा, सौ. पुष्पा चेचाणी, सौ. कल्पना बिहाणी	५०
६.	राधा-कृष्ण बाल संस्कार केंद्र	**सौ. प्रफुल्लता राठी** – सौ. मंगल लाहोटी, सौ. विणा लाहोटी	७०
७.	गुलाबराव महाराज बाल संस्कार केंद्र	**सौ. निर्मला साबू** – सौ. विष्णुकांता भक्कड, सौ. लक्ष्मी राव, सौ. मंगल मुंदडा, सौ. रेखा गव्हाणकर, सौ. स्नेहल मगरे	८०
८.	श्री स्वामी समर्थ बाल संस्कार केंद्र, नेर	**सौ. दिपाली लाहोटी** – श्री. नारायण बजाज, कु. दिपाली बजाज, सौ. दिपाली बंग, सौ. कल्पना नावंदर, कु. शारदा बंग, सौ. राजकन्या, शारदा और सरला बजाज	१५६
९.	परतुर	**सौ. विमला जेथलिया**	९८
१०.	मंठा	**सौ. कविता बिहाणी**	४०
		कुलयोग	**७४४**

संस्कार वाटिका - २०१७ (यवतमाल एवं आर्वी शाखांतर्गत केंद्र)

निम्न केंद्रोंका संयोजन गीता परिवार, यवतमाल शाखा अध्यक्षा सौ. प्रेमा राशतवार एवं आर्वी शहर में आर्वी शाखा अध्यक्षा सौ. उषा वैद्य के निर्देशन में संपन्न हुये। वाटीकामें आरोग्य विषयक जानकारी एवं नूतन वाचनालय का आरंभ किया गया।

क्र.	विभाग	केन्द्र प्रमुख एवं सहयोगी कार्यकर्ता	विद्यार्थी संख्या
१.	मुक्ताबाई बाल संस्कार केंद्र	**सौ. प्रेमा राशतवार** – श्री. हेमंत भुमरे, सौ. सुरेखा उंबेरकर	६०
२.	ज्ञानेश्वर माउली बाल संस्कार केंद्र	**सौ. प्रेमा राशतवार** – सौ. लीला अग्रवाल, सौ. शुभांगी बोडके	३५
३.	गुरु माउली बाल संस्कार केंद्र	**सौ. प्रेमा राशतवार** – डॉ. टीकनायक	६५
४.	साई बाबा बाल संस्कार केंद्र	**डॉ. स्नेहल राशतवार** – व्ही. एस. उंबेरकर	४०
५.	श्री गजानन महाराज मंदिर,	**सौ. उषा वैद्य** – श्री. सलीम सर, जाजूवाडी, **आर्वी** सौ. दिपाली वानखेडे, कु. प्रतिक्षा दिगडे	६४
		कुलयोग	**२६४**

संस्कार वाटिका - २०१७ (विदर्भ शाखांतर्गत केंद्र)
निम्न केंद्रोंका संयोजन गीता परिवार, विदर्भ प्रमुख सौ. शोभा हरकुट के निर्देशन में संपन्न हुये।

क्र.	विभाग	केन्द्र प्रमुख एवं सहयोगी कार्यकर्ता	विद्यार्थी संख्या
१.	जी. आर. काबरा स्कूल, चांदूरबाजार	**सौ. शोभा हरकुट** – सौ. श्रुतकिर्ती गणोरकर, सौ. सपना राठोड, सौ. सोनू रामटेके, गावठे गुरुजी	७०
२.	आसेगाव	**सौ. नैना कडू** – श्री. विशाल वटाणे	५५
३.	:::.पूर्णा	**सौ. नैना कडू** – श्री. विशाल वटाणे	३०
४.	ब्लोसम इंग्लिश स्कूल अमरावती	**सौ. आशा लड्डा** – सौ. शोभा हरकुट	५९
५.	प्रगती माध्यमिक स्कूल अमरावती	**सौ. नेहा देशपांड** – सौ. रेखा भुतडा, सौ. लता ठाकूर	६०
६.	साईबाबा केंद्र, अमरावती	**सौ. रेखा भुतडा** – सौ. मीना पांडे	७०
७.	बालाजी केंद्र, अमरावती	सौ. उमा व्यास	६०
८.	आकांक्षा कन्या विद्यालय, परतवाडा	सौ. माधवी वेरूलकर	६५
९.	मुक्तेश्वर आश्रम, खामगांव	सौ. अनुजा भट्टड, सौ. ममता पणपालिया	११३
		कुलयोग	**५८२**

विशेष: नागपुर में सौ. वंदना वर्णेकर एवं श्री रामदासानी के नेतृत्व में १२ महिने साप्ताहिक वर्गो का आयोजन होता है।

संस्कार वाटिका - २०१७ (धुलिया शाखांतर्गत केंद्र)
निम्न केंद्रोंका संयोजन गीता परिवार, धुलिया शाखाध्यक्षा सौ. सुनिता रमेश राठी के निर्देशन में संपन्न हुये।

क्र.	विभाग	केन्द्र प्रमुख एवं सहयोगी कार्यकर्ता	विद्यार्थी संख्या
१.	वासुदेव आश्रम	**सौ. सविता मुंदडा** – इंद्रायणी मुंदडा	१००
२.	महर्षि व्यास आश्रम	**सौ. उषा काबरा** – योगिता बाहेती	६०
३.	चैतन्य महाप्रभू आश्रम	**सौ. स्नेहल केले** – लता आगीवाल	७०
४.	महावीर आश्रम	**सौ. शालिनी मंदान** – मनिषा मुंदडा	९०
५.	सांदिपनी आश्रम	**सौ. सुलोचना अग्रवाल** – वंदना खंडेलवाल	८०
६.	साई आश्रम	**सौ. कल्पना भागवत** – विजय अग्रवाल, दिक्षित सर	२००
		कुलयोग	**६००**

विशेष :- लखनऊ शाखा द्वारा डॉ. आशु भैय्या के निर्देशन में ग्रीष्म कालीन अवकाश में १०१ वर्गों का भव्य आयोजन किया जा रहा हैं।

संस्कार वाटिका - २०१७ (जयसिंगपुर शाखांतर्गत केंद्र)

निम्न केंद्र गीता परिवार कार्य विस्तारक श्रीमती प्रमिलाजी माहेश्वरी के निर्देशन में संपन्न हुये।

क्र.	विभाग	केन्द्र प्रमुख एवं सहयोगी कार्यकर्ता	विद्यार्थी संख्या
१.	रामकृष्ण मालू प्राथमिक विद्या मंदिर,	**सौ. अर्चना झंवर** – सौ. राखी झंवर, विद्या, मंजु मिणियार, सौ. रेखा मालपाणी, जयसिंगपुर	८०
२.	जीवनशिक्ष विद्यामंदिर, धरणगुत्ती	**श्रीमती प्रमिला माहेश्वरी –** सौ. अर्चना मानधना, उज्वला पवार, कल्पना पाटील, आशा मालपाणी, श्री. विनित बिहाणी,	२००
		कुलयोग	**२८०**

संस्कार वाटिका - २०१७ (सांगली शाखांतर्गत केंद्र)

निम्न केंद्र गीता परिवार, सांगली प्रमुख सौ. शकुंतला लड्डा के निर्देशन में संपन्न हुये।

क्र.	विभाग	केन्द्र प्रमुख एवं सहयोगी कार्यकर्ता	विद्यार्थी संख्या
१.	वेलणकरण विद्यामंदिर	**सौ. शकुंतला लड्डा –** सौ. सुलोचना लोया, सौ. पूनम सारडा, सौ. राधा लड्डा,	७०
२.	देशपांडे विद्यामंदिर	**सौ. सपना लड्डा –** सौ. पुष्पा सारडा, सौ. राजकमल मर्दा, सौ. सीता बजाज	६०
३.	मजलेकर हाईस्कूल	**सौ. अंजना मालू –** सौ. राखी मर्दा, सौ. उषा मानधना, सौ. अश्विनी राठी, सौ. दिपीका मर्दा,	६०
		कुलयोग	**१९०**

संस्कार वाटिका - २०१७ (दिल्ली शाखांतर्गत केंद्र)

निम्न केंद्रोंका संयोजन गीता परिवार, दिल्ली प्रमुख सौ. सरिता रानी के निर्देशन में संपन्न हुआ।

क्र.	विभाग	केन्द्र प्रमुख एवं सहयोगी कार्यकर्ता	विद्यार्थी संख्या
१.	इंद्रप्रस्थ म. डी. पब्लिक स्कूल	**सौ. सरिता रानी** – आदर्श शर्मा, गरिमा शर्मा, हार्दिक यादव, प्रियंका और भावना	२००
२.	नगरनिगम प्राथमिक विद्यालय	**सौ. सरिता रानी** – आदर्श शर्मा, गरिमा शर्मा, हार्दिक यादव, प्रियंका और भावना	२००
३.	सि. से. कन्या सरकारी विद्यालय	**सौ. सरिता रानी** – आदर्श शर्मा, गरिमा शर्मा, हार्दिक यादव, प्रियंका और भावना	१००
		कुलयोग	**५००**

सूचना :- शेष केन्द्रों के विवरण आगामी अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

।। वेदाः सर्वहितार्थाय ।।

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान

वेदविद्यालयों में छात्र प्रवेश सूचना

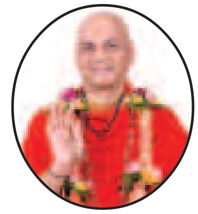

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान द्वारा संपूर्ण भारत में संचालित २८ वेदविद्यालयों में गुरुकुल एवम् पाठशाला पद्धति से निःशुल्क वेदों का अध्ययन कराया जाता है। साथ ही अंग्रेजी, संस्कृत, विज्ञान, गणित, संगणक, (कम्प्यूटर) आदि विषय भी सिखाये जाते हैं। अध्ययन की कालावधि सात वर्षों की है।

प्रवेश हेतु आवेदन-पत्र एवं अन्य जानकारी हेतु संपर्क

-: कार्यालय :-

'धर्मश्री' मानसर अपार्टमेंट्स, सूर्यमुखी दत्त मंदिर मार्ग,
पुणे विद्यापीठ रोड, पुणे–411 016 महाराष्ट्र
दूरभाषः (020) 25652589, ईमेल : dharmashree123@gmail.com

मोबाईल नंबर

1) **श्री अनिल दातार –** 8275066572, 2) **वे.मू. श्री महेश नंदे –** 9890837979
तथा 3) **श्री अविनाश मोरे (मोरे काका)–** 9420900425

क्र	प्रदेश	संपर्क	मोबाईल नं.
१.	महाराष्ट्र	वे.मू. श्री शशांक कुलकर्णी वे.मू. श्री भगवान् जोशी	9145382563 9860596163
२.	उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू, हरियाणा, पंजाब	वे.मू. श्री प्रदीप पांडे वे.मू. श्री टीकाराम रिजाल	9675721377 9453788502
३.	पं.बंगाल, उड़ीसा, मणिपुर तथा अन्य प्रदेश	वे.मू. श्री रामरूप मिश्र वे.मू. श्री हेम अधिकारी	09533495495 08131851842
४.	राजस्थान्, गुजरात, कच्छ, मध्यप्रदेश	वे.मू. श्री ब्रजेश तिवारी वे.मू. श्री रामकरण शर्मा	9199911135 09724196172

www.dharmashree.org **पर प्रवेश संबंधी जानकारी मिल सकती हैं।**

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान - दानदाता सूची

(दिनांक ०१/०१/२०१७ से दिनांक ३१/०३/२०१७ तक)

१ लाख एवं उससे अधिक

मुंबई: मे. आदित्य विक्रम बिरला मेमो ट्रस्ट, श्री. पंकज जाजू, श्रीमती सावित्री राजन, **पुणे:** मे. स्टरलाईट टेक फाउंडेशन, **औरंगाबाद:** श्री. अच्युतजी जोशी, श्री. ललितजी साबू, **लुधियाना:** श्री. राम कुमारजी मित्तल,

रु. ५० हजार से १ लाख

मालेगाव: मे. जनकाबाई दगडुरामजी काला चॅरि. ट्रस्ट, **वालूर:** श्री. वसंतराव चौधरी, **दिल्ली:** श्रीमती अनिता शर्मा, **पुणे:** श्रीमती सुमन मालपाणी,

रु. २५ हजार से ५० हजार

पुणे: श्री. कानिफनाथजी भगत, **नांदेड:** श्रीमती विमलाबाई सोमाणी परिवार, **सूरत:** श्री. मारु परिवार, **परभणी:** श्री. जगदीशजी जोशी, **न्यूयॉर्क:** श्री. व्ही. एस. रेगे, **औरंगाबाद:** श्री. निखिलजी जाजू,

रु. १० हजार से २५ हजार

पुणे: श्री. कमलेशजी शर्मा, श्री. सुजीतजी देशमुख, श्रीमती गायत्री सेवक, **जबलपुर:** डॉ. श्री. जीतेंद्रजी जामदार, **दिल्ली:** श्री. आदितजी सुनेजा, श्री. बृजमोहनजी अग्रवाल परिवार, मे. नवनीत अग्रवाल परिवार, श्रीमती सुनीता गुप्ता, श्री. संजयजी मनोचा, श्रीमती श्वेता मिश्रा, श्रीमती शशी अग्रवाल, श्रीमती इली मेहता, श्री. राकेशजी गुप्ता, श्री. सुनीलजी माहेश्वरी, श्रीमती उर्मिला शर्मा, श्रीमती सुमित्रा अग्रवाल, **मुंबई:** श्री. एम. एल. तापडिया, मे. तापडिया परिवार, **आलंदी:** श्री. संतोषजी बंदिष्टे, **औरंगाबाद:** श्रीमती विद्या मल, श्री. दिलीपजी सुतवणे, श्री. अभिजीतजी मुंदडा, मे. माहेश्वरी महिला मंडल, श्री. शिवराजजी देशमुख, श्री. संतोषजी झंवर, श्री. अशोकजी सदभावे, श्रीमती कौमुदी सोमानी, श्री. श्रीकांतजी मणियार, श्रीमती श्रुती सारडा, श्रीमती सारिका गट्टानी, श्री. अमरकुमारजी मुंदडा, श्री. शिवप्रसादजी तोतला, श्री. कैलाशजी नावंदर, **गाजियाबाद:** श्री. राजेश्वरजी प्रसाद तिवारी, **नाशिक:** श्री. प्रकाशजी जोशी, **खामगांव:** श्रीमती प्रेमादेवी केला, **बीड:** श्री. वीरकुमार स्वामी, **चंद्रपुर:** श्री. विजयजी उपाध्याय, श्रीमती सरिता उपाध्याय, श्री. ग्यानजी उपाध्याय, श्री. लीलारामजी उपाध्याय,

रु. ५ हजार से १० हजार

नांदेड: श्री. भागवतजी चक्रावार, श्री. विजयकुमार चक्करवार, **नागपुर:** श्रीमती क्षमा खांडवेकर, **मडेली:** मे. हरीश कुमार अँड ब्रदर्स, **पुणे:** श्रीमती जयश्री देशमुख, **दिल्ली:** श्रीमती नीता टंडन, श्रीमती पुष्पा शर्मा, श्री. स्वर्णकांत, श्री. विकासजी मलिक, श्री. अजितजी गुप्ता, श्री. संजीवजी गोएल, श्रीमती बीना अग्रवाल, श्री. सुधीरजी अग्रवाल, श्रीमती ममता अग्रवाल, श्री. धरमपालजी जिंदल, श्रीमती बरखा शर्मा, श्रीमती शकुंतला देवी, श्री. जगदीशजी गुलाटी, श्री. नरेशजी गर्ग, श्री. चंद्रशेखरजी शुक्ला, श्रीमती सरोज अग्रवाल, श्री. मुकेशजी काबरा, **हैदराबाद:** श्री. हनुमंतराव कुलकर्णी, श्री. नीलेशजी गुप्ता, **मानोरा:** श्री. शामजी बनगिनवार, **मुंबई:** श्री. रमेशजी काबरा, **पठाणकोट:** श्रीमती स्नेहलता महाजन, **औरंगाबाद:** श्री. योगेशजी बंग, श्री. एकनाथजी काबरा, **सूरत:** श्रीमती स्नेहलता कानोडिया, श्री. श्रीरामजी खेमका, **गुडगांव:** श्री. सुनीलजी माहेश्वरी, **गौतमबुद्धनगर:** श्रीमती प्रगती बंसल,